सब से बड़ा पुरातन और असली
भाई मनी सिंह जी वाला

श्रद्धा पूर्ण

गुर शब्द सिद्धि

संग्रह कर्ता : ज्ञानी हरबंस सिंह

१ओं सतिगुर प्रसादि ॥

सब से बड़ा,
असली और पुरातन ग्रंथ
श्री मान भाई मनी सिंघ जी वाला

गुर शब्द सिद्धि

अर्थात

श्रद्धा पूर्ण ग्रंथ

संग्रह कर्ता –
ज्ञानी हरबंस सिंघ जी

प्रकाशक :
भाई जवाहर सिंघ कृपाल सिंघ एंड कं:

© प्रकाशक

SHARDHA PURAN GRANTH

Gur Shabad Sidhi

Edited By : Giyani Harbans Singh Ji

भेटा : 90-00

ਟਾਈਪ ਸੈਟਿੰਗ :

ਗਲੋਬਲ ਕੰਪਿਊਟਰਜ਼, ਸੁਲਤਾਨਵਿੰਡ ਰੋਡ, ਅੰਮ੍ਰਿਤਸਰ । ਫੋਨ : 076965-62223

१ ओ सतिगुर प्रसादि ॥

श्रद्धा पूर्ण

अर्थात्

गुर शब्द सिद्धी

-बारे-

संखेप उत्थानका

साहिब श्री गुरू गोबिंद सिंह जी महाराज आनंदपुर की पवित्र धरती पर अनेक प्रकार के चोज वरतांदे रहे। उनका तेज प्रताप किसी से झेला नहीं जाता था रोज दीवान में सिंघासन पर सुशोभित होते और अपने मुखारबिंद से अनमोल वचन उचारते। जिनको सिख संगत सुण सुण कर गद गद हो जाती।

दसमेश पिता के पास भाई नंद लाल जी गोइया, भाई मनी सिंह जी, बाबा दीप सिंह जी और भी विद्वान हर समय रहते थे। बड़े बड़े महान् योधे कलगीधर जी ने पैदा किए। जिनका सिख इतिहास में जिकर आता है।

एक समय संगतों ने विचार किया कि गुरू साहिब जी के पास बेनती करें कि हमें भी कोई मुश्कल समय से बचने के लिए उपाए बताएं क्योंकि हम गुरबाणी के बगैर किसी को नहीं मानते। पंडत, मुलां तो जंत्र मंत्र से उपा करते हैं, दुख, तकलीफ, बिमारी और मुश्कल समय से बचने के लिए।

नम्रता सहित, हाथ जोड़, गले में पल्ला डार सतिगुरां के दरबार में कुछ सिख गए और विचार बताए।

भाई मनी सिंह जी ने कहा, मेरे ऊपर आप मिहरों का हाथ रखें। जैसे आप बुलाएंगे दास बोलेगा।

सतिगुर जी बोले श्री ग्रन्थ साहिब जी में से कुछ शब्द चुन कर एक पोथी त्यार करो, जिसमें हर प्रकार की कामनाओं की पूरती के लिए शब्द एकत्रित किए हों, उनकी विधि और महात्म लिखे हों।

भाई मनी सिंह जी ने सतिगुर जी के कहे मुताबिक शब्दों की पोथी त्यार की और सतिगुर जी के आगे लाकर रख दी। पातशाह बहुत प्रसन्न हुए। इस का नाम श्रद्धा पूर्ण रखा जाए।

जो भी इसे श्रद्धा भावना से पढ़ेगा शब्दों की विधि के अनुसार जाप करेगा। उस की मनो कामनाएं पूरी होंगी कष्ट दूर होंगे, लाभ प्राप्त होगा।

–ज्ञानी हरबंस सिंह

१ ओ सतिगुर प्रसादि ॥

श्री जपुजी साहिब

तथा

शब्दों का ततकरा

(विधि और महात्म)

श्रद्धा पूर्ण

पउड़ी नं.	महात्म	पंन्ना	पउड़ी नं.	महात्म	पंन्ना
मूल मंत्र	ज्ञान की प्राप्ति	९	अठाहरवीं पउड़ी	भूत-प्रेत की छाया दूर हो	१७
पहली पउड़ी	बुद्धि उज्जल हो	१०	उनीसवीं पउड़ी	मन-इछित फल मिले	१८
दूसरी पउड़ी	खुशियां प्राप्त हो	१०	बीसवीं पउड़ी	अधरंग रोग दूर हो	१८
तीसरी पउड़ी	धन प्राप्त हो	११	इकीसवीं पउड़ी	मान-वडियाई मिले	१९
चौथी पउड़ी	हर जगह जीत हो	११	बाईसवीं पउड़ी	सुंदर पुत्र पैदा हो	१९
पांचवीं पउड़ी	शत्रु पर फतह	१२	तेईसवीं पउड़ी	पर प्रकार के दुखों का नाश	२०
छठी पउड़ी	६८ तीर्थों का फल मिले	१२	चौबीसवीं पउड़ी	सब फलों की प्राप्ति	२०
सातवीं पउड़ी	सुख प्राप्त हो	१३	पचीसवीं पउड़ी	धन प्राप्ति, सुख मिले	२१
आठवीं पउड़ी	पापों का नाश हो	१३	छबीसवीं पउड़ी	बैकुण्ठ की प्राप्ति हो	२२
नौवीं पउड़ी	शादी होगी	१३	सताईसवीं पउड़ी	सुख-शांति मिले	२२
दसवीं पउड़ी	दु:खों पापों का अंत हो	१४	अठाईसवीं पउड़ी	संग्रहणी रोग दूर हो	२३
ग्यारवीं पउड़ी	सतिगुरू जी के दर्शन हों	१४	उन्नतीसवीं पउड़ी	घर में खुशी	२४
बारहवीं पउड़ी	हर प्रकार के सुख मिलें	१४	तीसवीं पउड़ी	सूखे बालक अरोग हों	२४
तेरहवीं पउड़ी	बुद्धि निर्मल हो	१५	इकतीसवीं पउड़ी	सुंदर बालक पैदा हो	२५
चौदहवीं पउड़ी	मुकद्दमे में जीत हो	१५	बत्तीसवीं पउड़ी	ऊंची पदवी मिले	२५
पंद्रहवीं पउड़ी	परिवार में सुख शांति हो	१६	तेतीसवीं पउड़ी	पुत्र की प्राप्ति हो	२६
सोलहवीं पउड़ी	राज-दरबार में इज्जत मिले	१७	चौतीसवीं पउड़ी	परिवार में सुख शांति	२६
सतारहवीं पउड़ी	हर प्रकार की खुशी मिले	१७	पैंतीसवीं पउड़ी	असाध रोग दूर हो	२७

शब्द नं.	महात्म	पंन्ना	शब्द नं.	महात्म	पंन्ना
छत्तीसवीं पउड़ी	गुम हुई वस्तु मिले	२८	शब्द नं: २२	वापार में लाभ होगा	४६
सैंतीसवीं पउड़ी	भाग्य उजवल हो	२८	शब्द नं: २३	हर प्रकार की रक्षा के लिए	४७
अठत्तीसवीं पउड़ी	सर्व मनोरथ पूर्ण	२९	शब्द नं: २४	फसल अधिक हो	४७
सलोकु	हृदय पवित्र हो जाता है	३०	शब्द नं:.२५	नौकरी में तरक्की हो	४८
अनंदु साहिब	ब्रहम ज्ञान की प्राप्ति हो	३२	शब्द नं: २६	बिमारी, मुकद्दमा, कष्ट दूर हो	४९
शब्द नं: १	घर में आनंद और खुशी	३४	शब्द नं: २७	बालक की सीतला दूर हो	४९
शब्द नं: २	सतिगुरु जी आप सहाई	३४	शब्द नं: २८	बिगड़े काम बन जाते हैं	५०
शब्द नं: ३	अच्छे गुणों वाली पत्नी मिले	३५	शब्द नं: २९	घर में सुख प्राप्त होगा	५०
शब्द नं: ४	सब मुरादें पूर्ण हों	३५	शब्द नं: ३०	मन गुरू चरणों में जुड़ता है	५१
शब्द नं: ५	आत्म ज्ञान की प्राप्ति	३६	शब्द नं: ३१	चिंता दूर होगी	५२
शब्द नं: ६	मन की एकाग्रता हो	३६	शब्द नं: ३२	हर प्रकार के रोग दूर हों	५२
शब्द नं: ७	ज्ञान और सुख की प्राप्ति	३७	शब्द नं: ३३	कोई पाप संताप नहीं छूता	५३
शब्द नं: ८	गुम हुई वस्तु मिले	३८	शब्द नं: ३४	किसी चीज़ की कमी नहीं रहती	५३
शब्द नं: ९	आदर सत्कार मिले	३९	शब्द नं: ३५	पति-पत्नी में प्यार बढ़ता है	५४
शब्द नं: १०	जगत् में सम्मान मिले	३९	शब्द नं: ३६	सतिगुरू की कृपा होती है	५५
शब्द नं: ११	हर जगह शोभा पाता है	४०	शब्द नं: ३७	सभी कष्ट दूर हो जाते हैं	५५
शब्द नं: १२	परिवार पर अपार कृपा हो	४१	शब्द नं: ३८	बच्चा बिना कष्ट के पैदा हो	५६
शब्द नं: १३	सभी पाप नष्ट हो जाते हैं	४१	शब्द नं: ३९	संगी-साथी सहाई होते हैं	५६
शब्द नं: १४	दौलत घर में आती है	४२	शब्द नं: ४०	हृदय निर्मल हो जाता है	५७
शब्द नं: १५	सतिगुरु हर समय रक्षा करेगा	४२	शब्द नं: ४१	सभी मुरादें पूर्ण होती हैं	५८
शब्द नं: १६	गरीबी दूर हो जाएगी	४३	शब्द नं: ४२	हर प्रकार की आशा पूर्ण हो	५८
शब्द नं: १७	पाप नाश हो जाते हैं	४३	शब्द नं: ४३	हर प्रकार की संपती मिलेगी	५९
शब्द नं: १८	संसार में इज्जन मान मिले	४४	शब्द नं: ४४	गुरू जी की अपार कृपा हो	५९
शब्द नं: १९	चिंता-कलह का नाश हो	४४	शब्द नं: ४५	हीरे जवाहरात की अचानक प्राप्ति	६०
शब्द नं: २०	सुंदर पुत्र पैदा होता है	४५	शब्द नं: ४६	पशु धन की कमी नहीं रहेगी	६१
शब्द नं: २१	हर प्रकार की रक्षा हो	४५	शब्द नं: ४७	खेती तथा वापार में लाभ हो	६१

शब्द नं.	महात्म	पंन्ना
शब्द नं: ४८	उच्च शिक्षा प्राप्त करे	६२
शब्द नं: ४९	हर प्रकार की विप्ता दूर हो	६३
शब्द नं: ५०	किसी को वश में करने के लिए	६३
शब्द नं: ५१	सभी रोग दूर हो जाते हैं	६४
शब्द नं: ५२	सभी प्रकार की रक्षा होगी	६५
शब्द नं: ५३	वाहिगुरू जी आप सहाई होंगे	६५
शब्द नं: ५४	बुद्धिमान हो जाता है	६६
शब्द नं: ५५	शेर, चिते आदि जंतुओं से रक्षा होगी	६६
शब्द नं: ५६	रुके कार्य पूर्ण होंगे	६७
शब्द नं: ५७	चिंता मिटे, धन प्राप्ति के लिए	६८
शब्द नं: ५८	संकटों से छुटकारा	६८
शब्द नं: ५९	कैद से छुटकारा, मान प्राप्त	६९
शब्द नं: ६०	सब उसका सन्मान करेंगे	६९
शब्द नं: ६१	ऊंची मत प्राप्त होती है	७०
शब्द नं: ६२	विद्या प्राप्त होती है	७०
शब्द नं: ६३	संसार में मान-इज्जत बढ़ता है	७१
शब्द नं: ६४	वापार में आवश्य लाभ होगा	७२
शब्द नं: ६५	गृहस्थ में सभी सुख प्राप्त होंगे	७२
शब्द नं: ६६	रात को बुरे सपने नहीं आते	७३
शब्द नं: ६७	हर प्रकार के कष्ट दूर होते हैं	७४
शब्द नं: ६८	भंडारे में कभी तोट नहीं आती	७४
शब्द नं: ६९	मानसिक, शरीरक, कलेश निवृत	७५
शब्द नं: ७०	मुकद्दमा, बिमारी, विप्ता से रक्षा	७६
शब्द नं: ७१	अच्छा कारोबार मिलता है	७६
शब्द नं: ७२	बालक की हर प्रकार से रक्षा	७७
शब्द नं: ७३	बिछुड़े रिश्तेदारों से मिलाप	७७
शब्द नं: ७४	संकट, मुकद्दमें में सहायता	७८
शब्द नं: ७५	कैद से छुटकारा मिले	७८
शब्द नं: ७६	मित्र का मिलाप होता है	७९
शब्द नं: ७७	संकट में अकाल पुरख सहाई हों	७९
शब्द नं: ७८	कैद से छुटे, मुकद्दमा फतह हो	८०
शब्द नं: ७९	भूत, प्रेत की छाया से रक्षा	८१
शब्द नं: ८०	मकान तथा दुकान सुखदाई हों	८१
शब्द नं: ८१	पति का मिलाप हो जाता है	८२
शब्द नं: ८२	बिमारी, मुकद्दमा समाप्त होगा	८२
शब्द नं: ८३	दुश्मन दूर रहेंगे	८३
शब्द नं: ८४	कोई भय नहीं लगेगा	८४
शब्द नं: ८५	संतोष प्राप्त होगा, सुख मिलेगा	८४
शब्द नं: ८६	डर, भय आदि दूर हो जाते हैं	८५
शब्द नं: ८७	मुकद्दमें में रक्षा होगी	८६
शब्द नं: ८८	दुःख दलिद्र दूर हो जाते हैं	८६
शब्द नं: ८९	पुत्र की दात प्राप्त होती है	८७
शब्द नं: ९०	वश में करने के लिए	८८
शब्द नं: ९१	पति राजी खुशी वापस घर आ जाएगा	८८
शब्द नं: ९२	बिछुड़े प्रेमी से प्यार बढ़ता है	८९
शब्द नं: ९३	खोया हुआ पुत्र मिल जाता है	९०
शब्द नं: ९४	शरीर अरोग और घर में सुख शांति	९०
शब्द नं: ९५	बच्चे का जन्म बिना कष्ट के होगा	९१
शब्द नं: ९६	बच्चा तंदरुस्त पैदा होगा	९२
शब्द नं: ९७	निंदक, निंदा करने से हट जाते हैं	९२
शब्द नं: ९८	बेअंत धन की प्राप्ति होती है	९३

शब्द नं.	महात्म	पंन्ना
शब्द नं: ९९	लड़के लड़की की अच्छे घर में मंगनी	९३
शब्द नं: १००	ईश्वर भक्ति में मन लगे	९४
शब्द नं: १०१	मन का भ्रम दूर होगा	९४
शब्द नं: १०२	मन के सब पाप दूर होंगे	९५
शब्द नं: १०३	हर प्रकार की रक्षा होगी	९६
शब्द नं: १०४	नौकरी में तरक्की हो जाएगी	९६
शब्द नं: १०५	धन की प्राप्ति होगी	९७
शब्द नं: १०६	सूखा बच्चा सेहतमंद होगा	९७
शब्द नं: १०७	बुखार ठीक होकर सेहत बने	९८
शब्द नं: १०८	हर प्रकार की रक्षा होगी	९८
शब्द नं: १०९	सतिसंग की प्राप्ति होगी	९८
शब्द नं: ११०	हर प्रकार की विप्ता दूर होगी	९९
शब्द नं: १११	मन को शांति और ज्ञान प्राप्त होगा	९९
शब्द नं: ११२	दु:ख दूर हो जाएगा	१००
शब्द नं: ११३	सतिसंग की प्राप्ति के लिए	१००
शब्द नं: ११४	हर प्रकार का कलेश नवृत हो	१००
शब्द नं: ११५	धन प्राप्त होगा	१०१
शब्द नं: ११६	बहुत धन-दौलत जमां होगी	१०१
शब्द नं: ११७	सभी प्रकार के कष्ट दूर होंगे	१०१
शब्द नं: ११८	मुकद्दमा फतह, कैद से छुटकारा	१०२
शब्द नं: ११९	दुश्मन का डर नहीं रहता	१०२
शब्द नं: १२०	सब कुछ घर से हासल होगा	१०३
शब्द नं: १२१	दुश्मन का भय दूर होगा	१०३
शब्द नं: १२२	हर प्रकार से रक्षा होती है	१०३
शब्द नं: १२३	वर्षा होगी	१०४
शब्द नं: १२४	वर्षा होगी	१०४
शब्द नं: १२५	सतिगुरू जी संकटों से रक्षा करेंगे	१०५
शब्द नं: १२६	हर बंधन टूट जाता है	१०५
शब्द नं: १२७	बिछुड़े संबंधियों से मिलाप हो	१०५
शब्द नं: १२८	घर में माया की लहर-बहर हो	१०६
शब्द नं: १२९	मन को शांति मिले	१०७
शब्द नं: १३०	मन इच्छत फल प्राप्त होगा	१०७
शब्द नं: १३१	बंधनों का नाश हो	१०७
शब्द नं: १३२	विप्ता से रक्षा होगी	१०८
शब्द नं: १३३	रोग दूर हो जाता है, कल्याण होता है	१०९
चौपई साहिब	हर प्रकार की रक्षा होगी	११०

१ओं सतिगुर प्रसादि ॥

सब से बड़ा,
असली और पुरातन ग्रंथ
श्री मान् भाई मनी सिंघ जी वाला

गुर शब्द सिद्धि

अर्थात्

श्रद्धा पूर्ण ग्रंथ

१ओं सति नामु करता पुरखु निरभउ निरवैरु
अकाल मूरति अजूनी सैभं गुर प्रसादि ॥
जपु ॥
आदि सचु जुगादि सचु ॥
है भी सचु नानक होसी भी सचु ॥१॥

विधि और महात्म

इस मूल मन्त्र का पाठ सुबह उठकर स्नान करके सतिगुरू के चरणों में ध्यान लगा कर हर रोज १०८ बार करें, ५१ दिन । ज्ञान प्राप्ति होगी ।

पउड़ी (पहली)

सोचै सोचि न होवई जे सोची लख वार॥
चुपै चुप न होवई जे लाइ रहा लिव तार॥
भुखिआ भुख न उतरी जे बंना पुरीआ भार॥
सहस सिआणपा लख होहि त इक न चलै नालि॥
किव सचिआरा होईऐ किव कूड़ै तुटै पालि॥
हुकमि रजाई चलणा नानक लिखिआ नालि॥१॥

विधि और महात्म

इस पउड़ी का पाठ मन को इकागर करके २१ दिन करें, हर रोज ५१ बार। बुद्धी उज्जल हो, मन को शांति आए, सोचों फिकरों से छुटकारा हो।

पउड़ी (दूसरी)

हुकमी होवनि आकार हुकमु न कहिआ जाई॥
हुकमी होवनि जीअ हुकमि मिलै वडिआई॥
हुकमी उतमु नीचु हुकमि लिखि दुख सुख पाईअहि॥
इकना हुकमी बखसीस इकि हुकमी सदा भवाईअहि॥
हुकमै अंदरि सभु को बाहरि हुकम न कोइ॥
नानक हुकमै जे बुझै त हउमै कहै न कोइ॥२॥

विधि और महात्म

इस पउड़ी का पाठ अमृत समय उठकर १०१ बार रोज करें, २१ दिन। मन इच्छे फल पावे। खुशियां प्राप्त होंगी।

पउड़ी (तीसरी)

गावै को ताणु होवै किसै ताणु ॥ गावै को दाति जाणै नीसाणु ॥
गावै को गुण वडिआईआ चार॥ गावै को विदिआ विखमु वीचारु ॥
गावै को साजि करे तनु खेह ॥ गावै को जीअ लै फिरि देह ॥
गावै को जापै दिसै दूरि ॥ गावै को वेखै हादरा हदूरि ॥
कथना कथी न आवै तोटि॥ कथि कथि कथी कोटी कोटि कोटि ॥
देदा दे लैदे थकि पाहि ॥ जुगा जुगंतरि खाही खाहि ॥
हुकमी हुकमु चलाए राहु ॥ नानक विगसै वेपरवाहु ॥३॥

विधि और महात्म

जो इस पउड़ी का पाठ श्रद्धा से १५१ बार हर रोज २१ दिन तक करेगा उस को भागों वाली स्त्री मिले, बेअंत धन की प्राप्ति होगी ।

पउड़ी (चौथी)

साचा साहिबु साचु नाइ भाखिआ भाउ अपारु ॥
आखहि मंगहि देहि देहि दाति करे दातारु ॥
फेरि कि अगै रखीऐ जितु दिसै दरबारु ॥
मुहौ कि बोलणु बोलीऐ जितु सुणि धरे पिआरु ॥
अंम्रित वेला सचु नाउ वडिआई वीचारु ॥
करमी आवै कपड़ा नदरी मोखु दुआरु ॥
नानक एवै जाणीऐ सभु आपे सचिआरु ॥४॥

विधि और महात्म

इस पउड़ी का नियम से रोजाना सुबह अमृत समय पाठ करें, ३१ दिन । सतिगुर मुंह मांगी मुराद देगा । हर जगह उसकी जीत होगी ।

पउड़ी (पाँचवीं)

थापिआ न जाइ कीता न होइ ॥ आपे आपि निरंजनु सोइ ॥
जिनि सेविआ तिनि पाइआ मानु ॥ नानक गावीऐ गुणी निधानु ॥
गावीऐ सुणीऐ मनि रखीऐ भाउ ॥ दुखु परहरि सुखु घरि लै जाइ ॥
गुरमुखि नादं गुरमुखि वेदं गुरमुखि रहिआ समाई ॥
गुरु ईसरु गुरु गोरखु बरमा गुरु पारबती माई ॥
जे हउ जाणा आखा नाही कहणा कथनु न जाई ॥
गुरा इक देहि बुझाई ॥
सभना जीआ का इकु दाता सो मै विसरि न जाई ॥५॥

विधि और महात्म

इस पउड़ी का पाठ सोमवार से आरम्भ करके २१ दिनों में सात हजार करें। शत्रु पर फतह पाएं। काम रास आ जाएगा।

पउड़ी (छठी)

तीरथि नावा जे तिसु भावा विणु भाणे कि नाइ करी ॥
जेती सिरठि उपाई वेखा विणु करमा कि मिलै लई ॥
मति विचि रतन जवाहर माणिक जे इक गुर की सिख सुणी ॥
गुरा इक देहि बुझाई ॥
सभना जीआ का इकु दाता सो मै विसरि न जाई ॥६॥

विधि और महात्म

जो इस पउड़ी का पाठ रविवार को आरम्भ करे। इकीस हजार बार इकीस दिनों में पढ़े। उस को घर में बैठे ही ६८ तीर्थों का फल प्राप्त होगा।

पउड़ी (सातवीं)

जे जुग चारे आरजा होर दसूणी होइ ॥
नवा खंडा विचि जाणीऐ नालि चलै सभु कोइ ॥
चंगा नाउ रखाइ कै जसु कीरति जगि लेइ ॥
जे तिसु नदरि न आवई त वात न पुछै के ॥
कीटा अंदरि कीटु करि दोसी दोसु धरे ॥
नानक निरगुणि गुणु करे गुणवंतिआ गुणु दे ॥
तेहा कोइ न सुझई जि तिसु गुणु कोइ करे ॥७॥

विधि और महात्म

इस पउड़ी का हर रोज पाठ करने से उमर लम्बी होगी और संसार के सभी सुख प्राप्त होंगे ।

पउड़ी (आठवीं)

सुणिऐ सिध पीर सुरि नाथ ॥ सुणिऐ धरति धवल आकास ॥
सुणिऐ दीप लोअ पाताल ॥ सुणिऐ पोहि न सकै कालु ॥
नानक भगता सदा विगासु ॥ सुणिऐ दूख पाप का नासु ॥८॥

विधि और महात्म

इस पउड़ी का पाठ बुधवार सुबह आरम्भ करें और १०८ बार पढ़ें, ५१ दिन तक । पापों का नाश होगा, दुखों से छुटकारा मिलेगा ।

पउड़ी (नौवीं)

सुणिऐ ईसरु बरमा इंदु ॥ सुणिऐ मुखि सालाहण मंदु ॥
सुणिऐ जोग जुगति तनि भेद ॥ सुणिऐ सासत सिम्रिति वेद ॥

नानक भगता सदा विगासु ॥ सुणिऐ दूख पाप का नासु ॥९॥

विधि और महात्म

इस पउड़ी का १०८ बार ३१ दिन पाठ करने से सभी काम सम्पूर्ण हो जाते हैं । शादी हो जाएगी ।

पउड़ी (दसवीं)

सुणिऐ सतु संतोखु गिआनु ॥ सुणिऐ अठसठि का इसनानु ॥
सुणिऐ पड़ि पड़ि पावहि मानु ॥ सुणिऐ लागै सहजि धिआनु ॥
नानक भगता सदा विगासु ॥ सुणिऐ दूख पाप का नासु ॥१०॥

विधि और महात्म

इस पउड़ी का एक सौ इकीस बार इकीस दिनों में पाठ हर रोज करने से दुखों और पापों का अंत हो जाएगा ।

पउड़ी (११वीं)

सुणिऐ सरा गुणा के गाह ॥ सुणिऐ सेख पीर पातिसाह ॥
सुणिऐ अंधे पावहि राहु ॥ सुणिऐ हाथ होवै असगाहु ॥
नानक भगता सदा विगासु ॥ सुणिऐ दूख पाप का नासु ॥११॥

विधि और महात्म

जो इस पउड़ी का सात दिनों में सात हजार पाठ सूर्य की ओर मुख करके करेगा उसको सतिगुर के दर्शन होंगे । सभी फल प्राप्त होंगे ।

पउड़ी (१२वीं)

मंने की गति कही न जाइ ॥ जे को कहै पिछै पछुताइ ॥

कागदि कलम न लिखणहारु॥ मंने का बहि करनि वीचारु ॥
ऐसा नामु निरंजनु होइ ॥ जे को मंनि जाणै मनि कोइ ॥१२॥

विधि और महात्म

इस पउड़ी का ४० दिनों में बीस हजार पाठ करें। सोमवार सुबह शुरू करें। हर प्रकार के सुख मिलेंगे।

पउड़ी (१३वीं)

मंनै सुरति होवै मनि बुधि ॥ मंनै सगल भवण की सुधि ॥
मंनै मुहि चोटा ना खाइ ॥ मंनै जम कै साथि न जाइ ॥
ऐसा नामु निरंजनु होइ ॥ जे को मंनि जाणै मनि कोइ ॥१३॥

विधि और महात्म

जो इस पउड़ी का निश्चय करके इकीस दिनों में इकीस हजार पाठ करेगा भाव हर रोज एक हजार करेगा उस का जन्म मरण काटा जाएगा। बुद्धी संतों जैसी हो जाएगी।

पउड़ी (१४वीं)

मंनै मारगि ठाक न पाइ ॥ मंनै पति सिउ परगटु जाइ ॥
मंनै मगु न चलै पंथु ॥ मंनै धरम सेती सनबंधु ॥
ऐसा नामु निरंजनु होइ ॥ जे को मंनि जाणै मनि कोइ ॥१४॥

विधि और महात्म

सुबह उठ कर हमेशां बुधवार के दिन एक सौ एक बार एकान्त में बैठ कर पाठ करें। मुकद्दमा जीते, शत्रु मित्र बनें।

पउड़ी (१५वीं)

मंनै पावहि मोखु दुआरु ॥ मंनै परवारै साधारु ॥
मंनै तरै तारे गुरु सिख ॥ मंनै नानक भवहि न भिख ॥
ऐसा नामु निरंजनु होइ ॥ जे को मंनि जाणै मनि कोइ ॥१५॥

विधि और महात्म

परिवार में सुख शांति और आनंद मिलता है। इस पउड़ी को हर रोज इकीस बार पढ़ें।

पउड़ी (१६वीं)

पंच परवाण पंच परधानु ॥ पंचे पावहि दरगहि मानु ॥
पंचे सोहहि दरि राजानु ॥ पंचा का गुरु एकु धिआनु ॥
जे को कहै करै वीचारु ॥ करते कै करणै नाही सुमारु ॥
धौलु धरमु दइआ का पूतु ॥ संतोखु थापि रखिआ जिनि सूति ॥
जे को बुझै होवै सचिआरु ॥ धवलै उपरि केता भारु ॥
धरती होरु परै होरु होरु ॥ तिस ते भारु तलै कवणु जोरु ॥
जीअ जाति रंगा के नाव ॥ सभना लिखिआ वुड़ी कलाम ॥
एहु लेखा लिखि जाणै कोइ ॥ लेखा लिखिआ केता होइ ॥
केता ताणु सुआलिहु रूपु ॥ केती दाति जाणै कौणु कूतु ॥
कीता पसाउ एको कवाउ ॥ तिस ते होए लख दरीआउ ॥
कुदरति कवण कहा वीचारु ॥ वारिआ न जावा एक वार ॥
जो तुधु भावै साई भली कार ॥ तू सदा सलामति निरंकार ॥१६॥

विधि और महात्म

इस पउड़ी का ग्यारह दिनों में ग्यारह सौ पाठ करें हर रोज सौ बार। राज

दरबार में इज्जत मान पाएं। इस पउड़ी का पाठ रविवार को सुबह ६ बजे आरम्भ करें।

पउड़ी (१७वीं)

असंख जप असंख भाउ ॥ असंख पूजा असंख तप ताउ ॥
असंख गरंथ मुखि वेद पाठ ॥ असंख जोग मनि रहहि उदास ॥
असंख भगत गुण गिआन वीचार ॥ असंख सती असंख दातार ॥
असंख सूर मुह भख सार ॥ असंख मोनि लिव लाइ तार ॥
कुदरति कवण कहा वीचारु ॥ वारिआ न जावा एक वार ॥
जो तुधु भावै साई भली कार ॥ तू सदा सलामति निरंकार ॥१७॥

विधि और महात्म

इस पउड़ी का जाप सोमवार से शुरू करें। पचास पाठ रोजाना इकीस दिन करने से हर प्रकार की खुशियां प्राप्त होंगी।

पउड़ी (१८वीं)

असंख मूरख अंध घोर ॥ असंख चोर हरामखोर ॥
असंख अमर करि जाहि जोर ॥ असंख गलवढ हतिआ कमाहि ॥
असंख पापी पापु करि जाहि ॥ असंख कूड़िआर कूड़े फिराहि ॥
असंख मलेछ मलु भखि खाहि ॥ असंख निंदक सिरि करहि भारु ॥
नानकु नीचु कहै वीचारु ॥ वारिआ न जावा एक वार ॥
जो तुधु भावै साई भली कार ॥ तू सदा सलामति निरंकार ॥१८॥

विधि और महात्म

इस पउड़ी का हर रोज ग्यारह बार पाठ करने से सभी ताप, संताप, भूत प्रेत

की छाया दूर होती है और शरीर अरोग्य हो जाता है ।

पउड़ी (१९वीं)

असंख नाव असंख थाव ॥ अगंम अगंम असंख लोअ ॥
असंख कहहि सिरि भारु होइ ॥ अखरी नामु अखरी सालाह ॥
अखरी गिआनु गीत गुण गाह ॥ अखरी लिखणु बोलणु बाणि ॥
अखरा सिरि संजोगु वखाणि ॥ जिनि एहि लिखे तिसु सिरि नाहि ॥
जिव फुरमाए तिव तिव पाहि ॥ जेता कीता तेता नाउ ॥
विणु नावै नाही को थाउ ॥ कुदरति कवण कहा वीचारु ॥
वारिआ न जावा एक वार ॥ जो तुधु भावै साई भली कार ॥
तू सदा सलामति निरंकार ॥१९॥

विधि और महात्म

मंगलवार से इस पउड़ी को पढ़ना शुरू करो । रविवार तक रोजाना २१ बार इस पउड़ी को पढ़ो जो मन में धारन करोगे वही मिल जाएगा ।

पउड़ी (२०वीं)

भरीऐ हथु पैरु तनु देह ॥ पाणी धोतै उतरसु खेह ॥
मूत पलीती कपड़ु होइ ॥ दे साबूणु लईऐ ओहु धोइ ॥
भरीऐ मति पापा कै संगि ॥ ओहु धोपै नावै कै रंगि ॥
पुंनी पापी आखणु नाहि ॥ करि करि करणा लिखि लै जाहु ॥
आपे बीजि आपे ही खाहु ॥ नानक हुकमी आवहु जाहु ॥२०॥

विधि और महात्म

बुधवार से लेकर पांच हजार पाठ २० दिनों में करना । पेशाब का रोग,

गुरदे का रोग, अधरंग का रोग दूर हो जाता है ।

पउड़ी (२१वीं)

तीरथु तपु दइआ दतु दानु ॥ जे को पावै तिल का मानु ॥
सुणिआ मंनिआ मनि कीता भाउ ॥ अंतरगति तीरथि मलि नाउ ॥
सभि गुण तेरे मै नाही कोइ ॥ विणु गुण कीते भगति न होइ ॥
सुअसति आथि बाणी बरमाउ ॥ सति सुहाणु सदा मनि चाउ ॥
कवणु सु वेला वखतु कवणु कवण थिति कवणु वारु ॥
कवणि सि रुती माहु कवणु जितु होआ आकारु ॥
वेल न पाईआ पंडती जि होवै लेखु पुराणु ॥
वखतु न पाइओ कादीआ जि लिखनि लेखु कुराणु ॥
थिति वारु ना जोगी जाणै रुति माहु ना कोई ॥
जा करता सिरठी कउ साजे आपे जाणै सोई ॥
किव करि आखा किव सालाही किउ वरनी किव जाणा ॥
नानक आखणि सभु को आखै इक दू इकु सिआणा ॥
वडा साहिबु वडी नाई कीता जा का होवै ॥
नानक जे को आपौ जाणै अगै गइआ न सोहै ॥२१॥

विधि और महात्म

इस पउड़ी का हर रोज सुबह चार बजे स्नान करके ४० दिन जाप करो । मान वडियाई मिलेगी ।

पउड़ी (२२वीं)

पाताला पाताल लख आगासा आगास ॥

ओड़क ओड़क भालि थके वेद कहनि इक वात ॥
सहस अठारह कहनि कतेबा असुलू इकु धातु ॥
लेखा होइ त लिखीऐ लेखै होइ विणासु ॥
नानक वडा आखीऐ आपे जाणै आपु ॥२२॥

विधि और महात्म

इस पउड़ी का ४० दिनों में १० बार रोज पाठ करो । घर में सुन्दर और जोधा पुत्र पैदा होगा ।

पउड़ी (२३वीं)

सालाही सालाहि एती सुरति न पाईआ ॥
नदीआ अतै वाह पवहि समुंदि न जाणीअहि ॥
समुंद साह सुलतान गिरहा सेती मालु धनु ॥
कीड़ी तुलि न होवनी जे तिसु मनहु न वीसरहि ॥२३॥

विधि और महात्म

२१ दिन ३१ हजार पाठ करो, जल की गड़वी भरके पास रखो । पाठ पूरा होने पर जिसको इस गड़वी का जल दोगे उसकी सब तकलीफ दूर हो जाएगी ।

पउड़ी (२४वीं)

अंतु न सिफती कहणि न अंतु ॥ अंतु न करणै देणि न अंतु ॥
अंतु न वेखणि सुणणि न अंतु ॥ अंतु न जापै किआ मनि मंतु ॥
अंतु न जापै कीता आकारु ॥ अंतु न जापै पारावारु ॥
अंत कारणि केते बिललाहि ॥ ता के अंत न पाए जाहि ॥
एहु अंतु न जाणै कोइ ॥ बहुता कहीऐ बहुता होइ ॥

वडा साहिबु ऊचा थाउ ॥ ऊचे उपरि ऊचा नाउ ॥
एवडु ऊचा होवै कोइ ॥ तिसु ऊचे कउ जाणै सोइ ॥
जेवडु आपि जाणै आपि आपि ॥ नानक नदरी करमी दाति ॥२४॥

विधि और महात्म

इस पउड़ी के पढ़ने से सब फलों की प्राप्ति होती है । वाहिगुरू के चरणों में ध्यान लगा कर ४० दिन पढ़ो । हर रोज ५० बार ।

पउड़ी (२५वीं)

बहुता करमु लिखिआ ना जाइ ॥ वडा दाता तिलु न तमाइ ॥
केते मंगहि जोध अपार ॥ केतिआ गणत नही वीचारु ॥
केते खपि तुटहि वेकार ॥ केते लै लै मुकरु पाहि ॥
केते मूरख खाही खाहि ॥ केतिआ दूख भूख सद मार ॥
एहि भि दाति तेरी दातार ॥ बंदि खलासी भाणै होइ ॥
होरु आखि न सकै कोइ ॥ जे को खाइकु आखणि पाइ ॥
ओहु जाणै जेतीआ मुहि खाइ ॥ आपे जाणै आपे देइ ॥
आखहि सि भि केई केइ ॥ जिस नो बखसे सिफति सालाह ॥
नानक पातिसाही पातिसाहु ॥२५॥

विधि और महात्म

इस पउड़ी का ४० दिनों में बीस हजार पाठ करो । धन प्राप्ति, संसारिक सुख मिले । घर में पदार्थों के ढेर लगे रहेंगे । यह निश्चय करके जानना ।

पउड़ी (२६वीं)

अमुल गुण अमुल वापार ॥ अमुल वापारीए अमुल भंडार ॥

अमुल आवहि अमुल लै जाहि ॥ अमुल भाइ अमुला समाहि ॥
अमुलु धरमु अमुलु दीबाणु ॥ अमुलु तुलु अमुलु परवाणु ॥
अमुलु बखसीस अमुलु नीसाणु॥ अमुलु करमु अमुलु फुरमाणु ॥
अमुलो अमुलु आखिआ न जाइ॥ आखि आखि रहे लिव लाइ ॥
आखहि वेद पाठ पुराण ॥ आखहि पड़े करहि वखिआण ॥
आखहि बरमे आखहि इंद ॥ आखहि गोपी तै गोविंद ॥
आखहि ईसर आखहि सिध ॥ आखहि केते कीते बुध ॥
आखहि दानव आखहि देव॥ आखहि सुरि नर मुनि जन सेव ॥
केते आखहि आखणि पाहि॥ केते कहि कहि उठि उठि जाहि ॥
एते कीते होरि करेहि ॥ ता आखि न सकहि केई केइ ॥
जेवडु भावै तेवडु होइ ॥ नानक जाणै साचा सोइ ॥
जे को आखै बोलुविगाड़ु॥ ता लिखीऐ सिरि गावारा गावारु॥२६॥

विधि और महात्म

बुधवार से आरम्भ करें। एक सौ आठ दिन रोज एक सौ आठ बार पाठ करें। अमुल वस्तुएं मिलें बैकुण्ठ प्राप्ति हो, दुश्मनों और निंदकों को हानि हो।

पउड़ी (२७वीं)

सो दरु केहा सो घरु केहा जितु बहि सरब समाले ॥
वाजे नाद अनेक असंखा केते वावणहारे ॥
केते राग परी सिउ कहीअनि केते गावणहारे ॥
गावहि तुहनो पउणु पाणी बैसंतरु गावै राजा धरमु दुआरे ॥
गावहि चितु गुपतु लिखि जाणहि लिखि लिखि धरमु वीचारे ॥
गावहि ईसरु बरमा देवी सोहनि सदा सवारे ॥

गावहि इंद इदासणि बैठे देवतिआ दरि नाले ॥
गावहि सिध समाधी अंदरि गावनि साध विचारे ॥
गावनि जती सती संतोखी गावहि वीर करारे ॥
गावनि पंडित पड़नि रखीसर जुगु जुगु वेदा नाले ॥
गावहि मोहणीआ मनु मोहनि सुरगा मछ पइआले ॥
गावनि रतन उपाए तेरे अठसठि तीरथ नाले ॥
गावहि जोध महाबल सूरा गावहि खाणी चारे ॥
गावहि खंड मंडल वरभंडा करि करि रखे धारे ॥
सेई तुधुनो गावहि जो तुधु भावनि रते तेरे भगत रसाले ॥
होरि केते गावनि से मै चिति न आवनि नानकु किआ वीचारे ॥
सोई सोई सदा सचु साहिबु साचा साची नाई ॥
है भी होसी जाइ न जासी रचना जिनि रचाई ॥
रंगी रंगी भाती करि करि जिनसी माइआ जिनि उपाई ॥
करि करि वेखै कीता आपणा जिव तिस दी वडिआई ॥
जो तिसु भावै सोई करसी हुकमु न करणा जाई ॥
सो पातिसाहु साहा पातिसाहिबु नानक रहणु रजाई ॥२७॥

विधि और महात्म

इस पउड़ी का सुबह ४० हजार पाठ करें । शरीर के भयानक रोग दूर हो जाएंगे । मन को सुख शांति मिलेगी ।

पउड़ी (२८वीं)

मुंदा संतोखु सरमु पतु झोली धिआन की करहि बिभूति ॥
खिंथा कालु कुआरी काइआ जुगति डंडा परतीति ॥
आई पंथी सगल जमाती मनि जीतै जगु जीतु ॥

आदेसु तिसै आदेसु ॥
आदि अनीलु अनादि अनाहति जुगु जुगु एको वेसु ॥२८॥

विधि और महात्म

इस पउड़ी को रविवार से शुरू करें। दस दिनों में पांच हजार पाठ करें। अतीसार और संग्रहणी रोग दूर होगा।

पउड़ी (२९वीं)

भुगति गिआनु दइआ भंडारणि घटि घटि वाजहि नाद ॥
आपि नाथु नाथी सभ जा की रिधि सिधि अवरा साद ॥
संजोगु विजोगु दुइ कार चलावहि लेखे आवहि भाग ॥
आदेसु तिसै आदेसु ॥
आदि अनीलु अनादि अनाहति जुगु जुगु एको वेसु ॥२९॥

विधि और महात्म

गुरुवार से पउड़ी का पाठ शुरू करें। चौदह दिन हर रोज ५० पाठ करें। उस पर सतिगुरु की अपार बख्शिश होगी। घर में खुशी और बहार रहेगी।

पउड़ी (३०वीं)

एका माई जुगति विआई तिनि चेले परवाणु ॥
इकु संसारी इकु भंडारी इकु लाए दीबाणु ॥
जिव तिसु भावै तिवै चलावै जिव होवै फुरमाणु ॥
ओहु वेखै ओना नदरि न आवै बहुता एहु विडाणु ॥
आदेसु तिसै आदेसु ॥
आदि अनीलु अनादि अनाहति जुगु जुगु एको वेसु ॥३०॥

विधि और महात्म

इकताली सौ पाठ शुक्रवार से लेकर जितने दिनों में हो सके करो, रोजाना नियम से। बुधवार निर्मल होगा। जल पास रखें, उस जल का अमृत देने से भूत प्रेत की छाया दूर हो जाती है। सूखे बालक अरोग होंगे।

पउड़ी (३१वीं)

आसणु लोइ लोइ भंडार॥
जो किछु पाइआ सु एका वार॥
करि करि वेखै सिरजणहारु॥
नानक सचे की साची कार॥
आदेसु तिसै आदेसु॥
आदि अनीलु अनादि अनाहति
जुगु जुगु एको वेसु ॥३१॥

विधि और महात्म

मंगलवार पहर रात हो तो १० हजार पाठ करें। पास जल का गड़वा रखें। यह जल जिस स्त्री को दिया जाए उसे गर्भ ठहरे और सुन्दर बालक हो।

पउड़ी (३२वीं)

इक दू जीभौ लख होहि लख होवहि लख वीस॥
लखु लखु गेड़ा आखीअहि एकु नामु जगदीस॥
एतु राहि पति पवड़ीआ चड़ीऐ होइ इकीस॥
सुणि गला आकास की कीटा आई रीस॥
नानक नदरी पाईऐ कूड़ी कूड़ै ठीस॥३२॥

विधि और महात्म

यह पउड़ी १०८ बार, ४० दिन पढ़ने से जनता में सत्कार बढ़े। राज दरबार में ऊंची पदवी मिले।

पउड़ी (३३वीं)

आखणि जोरु चुपै नह जोरु ॥
जोरु न मंगणि देणि न जोरु ॥
जोरु न जीवणि मरणि नह जोरु ॥
जोरु न राजि मालि मनि सोरु ॥
जोरु न सुरती गिआनि वीचारि ॥
जोरु न जुगती छुटै संसारु ॥
जिसु हथि जोरु करि वेखै सोइ ॥
नानक उतमु नीचु न कोइ ॥३३॥

विधि और महात्म

दस हजार पाठ करें। रविवार से ले कर प्रातःकाल समय ज्योतिष विद्या का ज्ञान हासिल हो। रोग मिटे, पुत्र की प्राप्ति हो।

पउड़ी (३४वीं)

राती रुती थिती वार ॥
पवण पाणी अगनी पाताल ॥
तिसु विचि धरती थापि रखी धरम साल ॥
तिसु विचि जीअ जुगति के रंग ॥
तिन के नाम अनेक अनंत ॥
करमी करमी होइ वीचारु ॥

सचा आपि सचा दरबारु ॥
तिथै सोहनि पंच परवाणु ॥
नदरी करमि पवै नीसाणु ॥
कच पकाई ओथै पाइ ॥
नानक गइआ जापै जाइ ॥३४॥

विधि और महात्म

२१ दिनों में हर रोज एक सौ पाठ करो । परिवार में सुख शांति बनी रहे । किसी किस्म का दुख या तकलीफ न रहे ।

पउड़ी (३५वीं)

धरम खंड का एहो धरमु ॥
गिआन खंड का आखहु करमु ॥
केते पवण पाणी वैसंतर केते कान महेस ॥
केते बरमे घाड़ति घड़ीअहि रूप रंग के वेस ॥
केतीआ करम भूमी मेर केते केते धू उपदेस ॥
केते इंद चंद सूर केते केते मंडल देस ॥
केते सिध बुध नाथ केते केते देवी वेस ॥
केते देव दानव मुनि केते केते रतन समुंद ॥
केतीआ खाणी केतीआ बाणी केते पात नरिंद ॥
केतीआ सुरती सेवक केते नानक अंतु न अंतु ॥३५॥

विधि और महात्म

प्रातः ६ बजे उठ कर स्नान करके पवित्र वस्त्र बिछा कर उस पर आसन लगा कर चालीस दिन में चालीस पाठ हर रोज करने से असाध रोग दूर हो जाते

हैं । देही अरोग हो । हर तरह के पदार्थों की प्राप्ति हो ।

पउड़ी (३६वीं)

गिआन खंड महि गिआनु परचंडु ॥
तिथै नाद बिनोद कोड अनंदु ॥
सरम खंड की बाणी रूपु ॥
तिथै घाड़ति घड़ीऐ बहुतु अनूपु ॥
ता कीआ गला कथीआ ना जाहि ॥
जे को कहै पिछै पछुताइ ॥
तिथै घड़ीऐ सुरति मति मनि बुधि ॥
तिथै घड़ीऐ सुरा सिधा की सुधि ॥३६॥

विधि और महात्म

एक सौ आठ दिन रोज एक सौ आठ बार जपने से ज्ञान वैराग और भक्ति की दात प्राप्त हो । सभी पाप नष्ट हों । रविवार से शुरु करें । गुम हुई वस्तु मिलेगी ।

पउड़ी (३७वीं)

करम खंड की बाणी जोरु ॥
तिथै होरु न कोई होरु ॥
तिथै जोध महाबल सूर ॥
तिन महि रामु रहिआ भरपूर ॥
तिथै सीतो सीता महिमा माहि ॥
ता के रूप न कथने जाहि ॥

ना ओहि मरहि न ठागे जाहि ॥
जिन कै रामु वसै मन माहि ॥
तिथै भगत वसहि के लोअ ॥
करहि अनंदु सचा मनि सोइ ॥
सच खंडि वसै निरंकारु ॥
करि करि वेखै नदरि निहाल ॥
तिथै खंड मंडल वरभंड ॥
जे को कथै त अंत न अंत ॥
तिथै लोअ लोअ आकार ॥
जिव जिव हुकमु तिवै तिव कार ॥
वेखै विगसै करि वीचारु ॥
नानक कथना करड़ा सारु ॥३७॥

विधि और महात्म

इस पउड़ी को तेरह सौ बार, तेरह दिनों में जपें। मंगलवार को सुबह। पूर्व जन्म के पाप मिटें। भाग उजले हों।

पउड़ी (३८वीं)

जतु पाहारा धीरजु सुनिआरु ॥
अहरणि मति वेदु हथीआरु ॥
भउ खला अगनि तप ताउ ॥
भांडा भाउ अंम्रितु तितु ढालि ॥
घड़ीऐ सबदु सची टकसाल ॥
जिन कउ नदरि करमु तिन कार ॥

नानक नदरी नदरि निहाल ॥३८॥

विधि और महात्म

पांच हजार पाठ १० दिन में करने से मनोरथ पूर्ण हो जाते हैं । काम क्रोध वस में हो जाता है ।

सलोकु ।।

पवणु गुरू पाणी पिता माता धरति महतु ॥
दिवसु राति दुइ दाई दाइआ खेलै सगल जगतु ॥
चंगिआईआ बुरिआईआ वाचै धरमु हदूरि ॥
करमी आपो आपणी के नेड़ै के दूरि ॥
जिनी नामु धिआइआ गए मसकति घालि ॥
नानक ते मुख उजले केती छुटी नालि ॥१॥

विधि और महात्म

२१ दिन हर रोज १०८ बार जपने से सभी संताप नवृति हो जाते हैं । हृदय शुद्ध और पवित्र हो जाता है । प्रभु की प्राप्ति हो जाती है । मुक्ति की दात प्राप्त हो जाती है ।

जपुजी साहिब का महात्म सम्पूर्ण हुआ ।।
बोलो जी सतिनाम श्री वाहिगुरू ।।

नितनेम की बाणियों का महात्म

१. जपुजी साहिब के हर रोज़ पाँच पाठ करने से श्री गुरू नानक देव जी की अपार कृपा होती है व मुकत भुगत की प्राप्ति होती है।

२. शब्द हज़ारे का एक पाठ रोज़ करने से प्रेम भक्ति श्रद्धा और गुरू पर विश्वास दृढ़ होता है।

३. जापु साहिब का एक पाठ हर रोज़ करने से अकाल पुरख की वडिआई करने का फल, शुभ गुण व सुखों की प्राप्ति होती है। श्री कलगीधर जी की मेहर होती है।

४. प्रात : समय के सवैयों का रोज़ाना पाठ करने से ज्ञान, वैराग व विवेक की दात मिलती है।

५. कबियो बाच बेनती॥ चौपई के पाँच पाठ हर रोज़ करने से श्री कलगीधर जी की अपार कृपा से प्रभु का मिलाप होता है।

६. श्री अनंद साहिब का पाठ रोज़ाना करने से ज़िंदगी अनंद पूर्वक व्यतीत होती है। दु:खों कलेशों की नवृति हो जाती है।

७. शाम को रहरासि का पाठ करने से सारे दिन के पापों की मैल दूर हो के मन निर्मल हो जाता है।

८. रात को सोते समय कीरतन सोहिले का पाठ करो। रात सुखमय व्यतीत होती है।

९. हर रोज़ सुखमनी साहिब का एक पाठ करने से बेअंत सुखों तथा धन की प्राप्ति होती है।

अनंदु साहिब

रामकली महला ३ अनंदु

१ओ सतिगुर प्रसादि ।।

अनंदु भइआ मेरी माए सतिगुरू मै पाइआ ॥ सतिगुरु त पाइआ सहज सेती मनि वजीआ वाधाईआ ॥ राग रतन परवार परीआ सबद गावण आईआ ॥ सबदो त गावहु हरि केरा मनि जिनी वसाइआ ॥ कहै नानकु अनंदु होआ सतिगुरू मै पाइआ ॥१॥ ए मन मेरिआ तू सदा रहु हरि नाले ॥ हरि नालि रहु तू मंन मेरे दूख सभि विसारणा ॥ अंगीकारु ओहु करे तेरा कारज सभि सवारणा ॥ सभना गला समरथु सुआमी सो किउ मनहु विसारे ॥ कहै नानकु मंन मेरे सदा रहु हरि नाले ॥२॥ साचे साहिबा किआ नाही घरि तेरै ॥ घरि त तेरै सभु किछु है जिसु देहि सु पावए ॥ सदा सिफति सलाह तेरी नामु मनि वसावए ॥ नामु जिन कै मनि वसिआ वाजे सबद घनेरे ॥ कहै नानकु सचे साहिब किआ नाही घरि तेरै ॥३॥

साचा नामु मेरा आधारो ॥ साचु नामु अधारु मेरा जिनि भुखा सभि गवाईआ ॥ करि सांति सुख मनि आइ वसिआ जिनि इछा सभि पुजाईआ ॥ सदा कुरबाणु कीता गुरू विटहु जिस दीआ एहि वडिआईआ ॥ कहै नानकु सुणहु संतहु सबदि धरहु पिआरो ॥ साचा नामु मेरा आधारो ॥४॥ वाजे पंच सबद तितु घरि सभागै ॥ घरि सभागै सबद वाजे कला जितु घरि धारीआ ॥ पंच दूत तुधु वसि कीते कालु

कंटकु मारिआ ॥ धुरि करमि पाइआ तुधु जिन कउ सि नामि हरि कै लागे ॥ कहै नानकु तह सुखु होआ तितु घरि अनहद वाजे ॥५॥

अनदु सुणहु वडभागीहो सगल मनोरथ पूरे ॥ पारब्रहमु प्रभु पाइआ उतरे सगल विसूरे ॥ दूख रोग संताप उतरे सुणी सची बाणी ॥ संत साजन भए सरसे पूरे गुर ते जाणी ॥ सुणते पुनीत कहते पवितु सतिगुरु रहिआ भरपूरे ॥ बिनवंति नानकु गुर चरण लागे वाजे अनहद तूरे ॥४०॥१॥

विधि और महात्म

अनंदु साहिब का पाठ करने से अनंद प्राप्त होता है । किसी वस्तु की कमी नहीं रहती । मन सदा प्रसन्न ही रहता है और ब्रह्म ज्ञान की प्राप्ति होती है ।

शब्द नं: १

गूजरी महला ५ ।। (पंन्ना ४९९)

दुइ कर जोड़ि करी बेनंती ठाकुरु अपना धिआइआ ॥ हाथ देइ राखे परमेसरि सगला दुरतु मिटाइआ ॥१॥ ठाकुर होए आपि दइआल ॥ भई कलिआण अनंद रूप हुई है उबरे बाल गुपाल ॥१॥ रहाउ ॥ मिलि वर नारी मंगलु गाइआ ठाकुर का जैकारु ॥ कहु नानक तिसु गुर बलिहारी जिनि सभ का कीआ उधारु ॥२॥६॥१५॥

विधि और महात्म

घर में आनंद और खुशियां भरपूर रखने के लिए इस शब्द का हर रोज ५०० पाठ अमृत समय चानणे पक्ष से आरम्भ कर के २१ दिन करना ।

शब्द नं: २

गउड़ी माझ महला ४ ।। (पंन्ना १७३)

वसु मेरे पिआरिआ वसु मेरे गोविदा हरि करि किरपा मनि वसु जीउ ॥ मनि चिंदिअड़ा फलु पाइआ मेरे गोविंदा गुरु पूरा वेखि विगसु जीउ ॥ हरि नामु मिलिआ सोहागणी मेरे गोविंदा मनि अनदिनु अनदु रहसु जीउ ॥ हरि पाइअड़ा वडभागीई मेरे गोविंदा नित लै लाहा मनि हसु जीउ ॥३॥

विधि और महात्म

इस शब्द का ३१ बार लगातार पांच मंगलवार पाठ करना । घर में सदा मंगल और खुशियां रहेंगी । सतिगुरू जी आप सहाई होंगे ।

शब्द नं: ३

माझ महला ५ ।। (पंन्ना ९७-९८)

जितु घरि पिरि सोहागु बणाइआ ॥ तितु घरि सखीए मंगलु गाइआ ॥ अनद बिनोद तितै घरि सोहहि जो धन कंति सिगारी जीउ ॥१॥ सा गुणवंती सा वडभागणि ॥ पुत्रवंती सीलवंति सोहागणि ॥ रूपवंति सा सुघड़ि बिचखणि जो धन कंत पिआरी जीउ ॥२॥ अचारवंति साई परधाने ॥ सभ सिंगार बणे तिसु गिआने ॥ सा कुलवंती सा सभराई जो पिरि कै रंगि सवारी जीउ ॥३॥ महिमा तिस की कहणु न जाए ॥ जो पिरि मेलि लई अंगि लाए ॥ थिरु सुहागु वरु अगमु अगोचरु जन नानक प्रेम साधारी जीउ ॥४॥४॥११॥

विधि और महात्म

इस शब्द का हर मंगलवार को ५ बार पाठ करें । समय सुहावना हो, कोई दुख न हो । सतिगुरू जी रक्षा करेंगे । अच्छे गुणों वाली पत्नी मिलेगी ।

शब्द नं: ४

गउड़ी छंत महला ५ ।। (पंन्ना २४७-४८)

मेरै मनि अनदु भइआ जीउ वजी वाधाई ॥ घरि लालु आइआ पिआरा सभ तिखा बुझाई ॥ मिलिआ त लालु गुपालु ठाकुरु सखी मंगलु गाइआ ॥ सभ मीत बंधप हरखु उपजिआ दूत थाउ गवाइआ ॥ अनहत वाजे वजहि घर महि पिर संगि सेज विछाई ॥ बिनवंति नानकु सहजि रहै हरि मिलिआ कंतु सुखदाई ॥४॥१॥

विधि और महात्म

इस शब्द का सुबह अमृत समय सूर्य की ओर मुख कर के लगातार १० दिन एक ही पाठ हर रोज करने से घर में आनन्दमय सुभाग का समय आता है और मन की मुरादें पूर्ण होती हैं। पाठ करते समय श्री गुरू अरजन देव जी का ध्यान हृदय में विचारने से विशेष लाभ होता है।

(प्रभु भक्ति में मन लगे)

शब्द नं: ५

सलोक सहसक्रिती महला ५ ।। (पंन्ना १३५७)

मंत्रं राम राम नामं ध्यानं सरबत्र पूरनह ॥ ग्यानं सम दुख सुखं जुगति निरमल निरवैरणह ॥ दयालं सरबत्र जीआ पंच दोख बिवरजितह ॥ भोजनं गोपाल कीरतनं अलप माया जल कमल रहतह ॥ उपदेसं सम मित्र सत्रह भगवंत भगति भावनी ॥ पर निंदा नह स्रोति स्रवणं आपु त्यागि सकल रेणुकह ॥ खट लख्यण पूरनं पुरखह नानक नाम साध स्वजनह ॥ ४० ॥

विधि और महात्म

गुरूवार से शुरू करके इस श्लोक के ४० दिन तक अमृत समय लगातार नितप्रति ४० पाठ करें। इसके फल स्वरूप आप को आत्म ज्ञान की भी अवश्य ही प्राप्ति हो जाएगी।

शब्द नं: ६

वडहंसु महला ३ ।। (पंन्ना ५६०)

रसना हरि सादि लगी सहजि सुभाइ ॥ मनु त्रिपतिआ हरि नामु

धिआइ ॥ १ ॥ सदा सुखु साचै सबदि वीचारी ॥ आपणे सतगुर विटहु सदा बलिहारी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ अखी संतोखीआ एक लिव लाइ ॥ मनु संतोखिआ दूजा भाउ गवाइ ॥ २ ॥ देह सरीरि सुखु होवै सबदि हरि नाइ ॥ नामु परमलु हिरदै रहिआ समाइ ॥ ३ ॥ नानक मसतकि जिसु वडभागु ॥ गुर की बाणी सहज बैरागु ॥ ४ ॥ ७ ॥

विधि और महात्म

बुधवार से २१ बार इस शब्द का ४० दिन पाठ करना । मन में शांति संतोष प्राप्त होगा । मन की एकाग्रता हो ।

शब्द नं: ७

रागु धनासरी महला १।। (पंन्ना १३)

गगन मै थालु रवि चंदु दीपक बने तारिका मंडल जनक मोती ॥ धूपु मलआनलो पवणु चवरो करे सगल बनराइ फूलंत जोती ॥१॥ कैसी आरती होइ ॥ भव खंडना तेरी आरती ॥ अनहता सबद वाजंत भेरी ॥१॥ रहाउ ॥ सहस तव नैन नन नैन हहि तोहि कउ सहस मूरति ननाएक तुोही ॥ सहस पद बिमल नन एक पद गंध बिनु सहस तव गंध इव चलत मोही ॥२॥ सभ महि जोति जोति है सोइ ॥ तिस दै चानणि सभ महि चानणु होइ ॥ गुर साखी जोति परगटु होइ ॥ जो तिसु भावै सु आरती होइ ॥३॥ हरि चरण कवल मकरंद लोभित मनो अनदिनो मोहि आही पिआसा ॥ क्रिपा जलु देहि नानक सारिंग कउ होइ जा ते तेरै नाइ वासा ॥४॥३॥

विधि और महात्म

इस शब्द का सोमवार से २१ दिनों में २१००० जप करना । मन में ज्ञान और सहज सुख की प्राप्ति होगी । पाठ करते समय गुरू नानक देव जी का मन में ध्यान रखना ।

शब्द नं: ८

मारू महला ५ ॥ (पंन्ना १००२)

बाहरि ढूढन ते छूटि परे गुरि घर ही माहि दिखाइआ था॥ अनभउ अचरज रूपु प्रभ पेखिआ मेरा मनु छोडि न कतहू जाइआ था ॥१॥ मानकु पाइओ रे पाइओ हरि पूरा पाइआ था ॥ मोलि अमोलु न पाइआ जाई करि किरपा गुरू दिवाइआ था ॥१॥ रहाउ ॥ अदिसटु अगोचरु पारब्रहमु मिलि साधू अकथु कथाइआ था॥ अनहद सबदु दसम दुआरि वजिओ तह अंम्रित नामु चुआइआ था॥२॥ तोटि नाही मनि त्रिसना बूझी अखुट भंडार समाइआ था॥ चरण चरण चरण गुर सेवे अघड़ु घड़िओ रसु पाइआ था ॥३॥ सहजे आवा सहजे जावा सहजे मनु खेलाइआ था॥ कहु नानक भरमु गुरि खोइआ ता हरि महली महलु पाइआ था ॥४॥३॥१२॥

विधि और महात्म

इस शब्द का रविवार से चालीस दिन में पांच हजार पाठ करने से आत्म ज्ञान प्राप्त होता है । अगर इस को रोजाना ४० बार जपें तो गुम हुई वस्तु मिल जाएगी ।

शब्द नं: ९

गोंड महला ५ ।। (पंन्ना ८६३)

निमाने कउ जो देतो मानु॥ सगल भूखे कउ करता दानु॥ गरभ घोर महि राखनहारु॥ तिसु ठाकुर कउ सदा नमसकारु॥१॥ ऐसो प्रभु मन माहि धिआइ॥ घटि अवघटि जत कतहि सहाइ॥१॥ रहाउ॥ रंकु राउ जा कै एक समानि॥ कीट हसति सगल पूरान॥ बीओ पूछि न मसलति धरै॥ जो किछु करै सु आपहि करै॥२॥ जा का अंतु न जानसि कोइ॥ आपे आपि निरंजनु सोइ॥ आपि अकारु आपि निरंकारु॥ घट घट घटि सभ घट आधारु॥३॥ नाम रंगि भगत भए लाल॥ जसु करते संत सदा निहाल॥ नाम रंगि जन रहे अघाइ॥ नानक तिन जन लागै पाइ॥४॥३॥५॥

विधि और महात्म

इस शब्द को रविवार से लेकर ४० दिनों में १००० पाठ करने से जगत् में बहुत आदर सत्कार होता है। जहां भी जाओगे वहां मान मिलेगा।

शब्द नं: १०

गउड़ी महला ५ ।। (पंन्ना २८९)

जाचक जनु जाचै प्रभ दानु॥ करि किरपा देवहु हरि नामु॥ साध जना की मागउ धूरि॥ पारब्रहम मेरी सरधा पूरि॥ सदा सदा प्रभ के गुन गावउ॥ सासि सासि प्रभ तुमहि धिआवउ॥ चरन कमल सिउ लागै प्रीति॥ भगति करउ प्रभ की नित नीति॥ एक ओट एको आधारु॥ नानकु मागै नामु प्रभ सारु॥१॥

विधि और महात्म

इस शब्द के १० पाठ चानणे पक्ष की आधी रात से आरम्भ करके ४० दिन रोज़ करें । इस से जगत् में बहुत मान सम्मान मिलता है और सब आदर करते हैं ।

शब्द नं: ११

सूही महला ४ घरु ७ ॥ १ओं सतिगुर प्रसादि ॥ (पंन्ना ७३५)

तेरे कवन कवन गुण कहि कहि गावा तू साहिब गुणी निधाना ॥ तुमरी महिमा बरनि न साकउ तूं ठाकुर ऊच भगवाना ॥१॥ मै हरि हरि नामु धर सोई ॥ जिउ भावै तिउ राखु मेरे साहिब मै तुझ बिनु अवरु न कोई ॥१॥ रहाउ ॥ मै ताणु दीबाणु तूहै मेरे सुआमी मै तुधु आगै अरदासि ॥ मै होरु थाउ नाही जिसु पहि करउ बेनंती मेरा दुखु सुखु तुझ ही पासि ॥२॥ विचे धरती विचे पाणी विचि कासट अगनि धरीजै ॥ बकरी सिंघु इकतै थाइ राखे मन हरि जपि भ्रमु भउ दूरि कीजै ॥३॥ हरि की वडिआई देखहु संतहु हरि निमाणिआ माणु देवाए॥ जिउ धरती चरण तले ते ऊपरि आवै तिउ नानक साध जना जगतु आणि सभु पैरी पाए ॥४॥१॥१२॥

विधि और महात्म

इस शब्द के २१ पाठ २१ दिन प्रात: काल किसी चलते कुएं या नदी, नाले के पास बैठ कर नेम से करने पर पुरुष मात्र प्रताप सूर्य की तरह चमकता है और हर जगह शोभा पाता है ।

शब्द नं: १२

सवईए महले पहिले के १ (पंन्ना १३८९)

१ओं सतिगुर प्रसादि ॥

इक मनि पुरखु धिआइ बरदाता ॥ संत सहारु सदा बिखिआता ॥ तासु चरन ले रिदै बसावउ ॥ तउ परम गुरू नानक गुन गावउ ॥१॥ गावउ गुन परम गुरू सुख सागर दुरत निवारण सबद सरे ॥ गावहि गंभीर धीर मति सागर जोगी जंगम धिआनु धरे ॥ गावहि इंद्रादि भगत प्रहिलादिक आतम रसु जिनि ज़ाणिओ ॥ कबि कल सुजसु गावउ गुर नानक राजु जोगु जिनि माणिओ ॥२॥

विधि और महात्म

श्री गुरू नानक देव जी की खुशियाँ प्राप्त करने के लिए इस सवैये को हर रोज़ ११ बार जपो। श्री गुरू नानक देव जी की सारे परिवार पर अपार कृपा होगी।

शब्द नं: १३

सवईए महले दूजे के २ (पंन्ना १३९२)

अमिअ द्रिसटि सुभ करै हरै अघ पाप सकल मल ॥ काम क्रोध अरु लोभ मोह वसि करै सभै बल ॥ सदा सुखु मनि वसै दुखु संसारह खोवै ॥ गुरु नव निधि दरीआउ जनम हम कालख धोवै ॥ सु कहु टल गुरु सेवीऐ अहिनिसि सहजि सुभाइ ॥ दरसनि परसिऐ गुरू कै जनम मरण दुखु जाइ ॥१०॥

विधि और महात्म

इस सवैये को हर रोज़ ३१ बार जपने से श्री गुरू अंगद देव जी की कृपा से सभी पाप नष्ट हो जाते हैं। काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार आदि विकार नवृत हो जाते हैं। हर प्रकार के दुःख और रोग दूर हो जाते हैं।

शब्द नं: १४

सवईए महले तीजे के ३ (पंन्ना १३९६)

घनहर बूंद बसुअ रोमावलि कुसम बसंत गनंत न आवै ॥ रवि ससि किरणि उदरु सागर को गंग तरंग अंतु को पावै ॥ रुद्र धिआन गिआन सतिगुर के कबि जन भल्य उनह जो गावै ॥ भले अमरदास गुण तेरे तेरी उपमा तोहि बनि आवै ॥१॥२२॥

विधि और महात्म

इस सवैये को हर रोज़ ११ बार जपने से श्री गुरू अमरदास जी के दर-घर से सभी पदार्थों की प्राप्ति होती है। बहुत दौलत घर में आती है।

शब्द नं: १५

सवईए महले चउथे के ४ (पंन्ना १४०६)

हम अवगुणि भरे एकु गुणु नाही अंम्रितु छाडि बिखै बिखु खाई ॥ माया मोह भरम पै भूले सुत दारा सिउ प्रीति लगाई ॥ इकु उतम पंथु सुनिओ गुर संगति तिह मिलंत जम त्रास मिटाई ॥ इक अरदासि भाट कीरति की गुर रामदास राखहु सरणाई ॥४॥५८॥

विधि और महात्म

इस सवैये को हर रोज़ प्रातःकाल स्नान करके एकाग्रचित होकर ३१ बार जपें । सतिगुरू रामदास जी की गुरसिख पर अपार कृपा होगी । सतिगुरू हर समय पैज रखेगा ।

शब्द नं: १६

सवईए महले पंजवे के ५ (पंन्ना १४०९)

कलि समुद्र भए रूप प्रगटि हरि नाम उधारनु ॥ बसहि संत जिसु रिदै दुख दारिद्र निवारनु ॥ निरमल भेख अपार तासु बिनु अवरु न कोई ॥ मन बच जिनि जाणिअउ भयउ तिह समसरि सोई ॥ धरनि गगन नव खंड महि जोति स्वरूपी रहिओ भरि ॥ भनि मथुरा कछु भेदु नही गुरु अरजुनु परतख्य हरि ॥७॥१९॥

विधि और महात्म

इस सवैये को हर रोज़ २१ बार जपें । श्री गुरू अर्जुन देव जी की कृपा से सभी दुःख, गरीबी दूर हो जाएगी। प्रभु के भी साक्षात दर्शन होंगे ।

शब्द नं: १७

सोरठि महला ५ घरु ३ दुपदे (पंन्ना ६२५)

१ओं सतिगुर प्रसादि ॥

रामदास सरोवरि नाते ॥ सभि उतरे पाप कमाते ॥ निरमल होए करि इसनाना ॥ गुरि पूरै कीने दाना ॥१॥ सभि कुसल खेम प्रभि धारे ॥ सही सलामति सभि थोक उबारे गुर का सबदु वीचारे ॥ रहाउ ॥ साधसंगि मलु लाथी ॥ पारब्रहमु भइओ साथी ॥ नानक नामु

धिआइआ ॥ आदि पुरख प्रभु पाइआ ॥२॥१॥६५॥

विधि और महात्म

इस शब्द का स्नान करके २१ बार हर रोज़ लगातार पाठ करने से श्री अमृतसर जी के सरोवर के स्नान का फल प्राप्त होता है और श्री गुरू रामदास जी की अपार कृपा से सभी दुःख, कलेश और पाप नास हो जाते हैं ।

शब्द नं: १८

धनासरी महला ४ ।। (पंन्ना ६६९-७०)

इछा पूरकु सरब सुखदाता हरि जा कै वसि है कामधेना ॥ सो ऐसा हरि धिआईऐ मेरे जीअड़े ता सरब सुख पावहि मेरे मना ॥१॥ जपि मन सति नामु सदा सति नामु ॥ हलति पलति मुख ऊजल होई है नित धिआईऐ हरि पुरखु निरंजना ॥ रहाउ ॥ जह हरि सिमरनु भइआ तह उपाधि गतु कीनी वडभागी हरि जपना ॥ जन नानक कउ गुरि इह मति दीनी जपि हरि भवजलु तरना ॥२॥६॥१२॥

विधि और महात्म

इस शब्द को ४० दिन २१ बार हर रोज़ जपने से मन की सभी इच्छाएं पूर्ण होती हैं । संसार में इज्जत व मान मिलता है । सभी दुःख कलेश व रोग नवृत हो जाते हैं ।

शब्द नं: १९

सवईए महले तीजे के ३ (पंन्ना १३९५)

चिति चितवउ अरदासि कहउ परु कहि भि न सकउ ॥ सरब चिंत तुझु पासि साधसंगति हउ तकउ ॥ तेरै हुकमि पवै नीसाणु तउ

करउ साहिब की सेवा ॥ जब गुरु देखै सुभ दिसटि नामु करता मुखि मेवा ॥ अगम अलख कारण पुरख जो फुरमावहि सो कहउ ॥ गुर अमरदास कारण करण जिव तू रखहि तिव रहउ ॥४॥१८॥

विधि और महात्म

इस सवैये के २१ दिन २१ पाठ हर रोज़ करने से मन की चिन्ता व कलह का नाश होता है ।

शब्द नं: २०

सोरठि महला ५ ॥ (पंन्ना ६२७-२८)

परमेसरि दिता बंना ॥ दुख रोग का डेरा भंना ॥ अनद करहि नर नारी ॥ हरि हरि प्रभि किरपा धारी ॥१॥ संतहु सुखु होआ सभ थाई ॥ पारब्रहमु पूरन परमेसरु रवि रहिआ सभनी जाई ॥ रहाउ ॥ धुर की बाणी आई ॥ तिनि सगली चिंत मिटाई ॥ दइआल पुरख मिहरवाना ॥ हरि नानक साचु वखाना ॥२॥१३॥७७॥

विधि और महात्म

इस शब्द का शुक्ला पक्ष में हर रोज़ एक सौ एक बार लगातार ११ दिन पाठ करने से सुंदर पुत्र पैदा होता है । घर में लड़के लड़की के शगुन सन्बंधी खुशियों के कार्य होते हैं ।

शब्द नं: २१

माझ महला ५ दिन रैणि (पंन्ना १३६)

१ओ सतिगुर प्रसादि ॥

सेवी सतिगुरु आपणा हरि सिमरी दिन सभि रैण ॥ आपु तिआगि

सरणी पवां मुखि बोली मिठड़े वैण ॥ जनम जनम का विछुड़िआ हरि मेलहु सजणु सैण ॥ जो जीअ हरि ते विछुड़े से सुखि न वसनि भैण ॥ हरि पिर बिनु चैनु न पाईऐ खोजि डिठे सभि गैण ॥ आप कमाणै विछुड़ी दोसु न काहू देण ॥ करि किरपा प्रभ राखि लेहु होरु नाही करण करेण ॥ हरि तुधु विणु खाकू रूलणा कहीऐ किथै वैण ॥ नानक की बेनंतीआ हरि सुरजनु देखा नैण ॥१॥

विधि और महात्म

इस शब्द के २१ पाठ रोज सुबह स्नान आदि करके करें तो हर प्रकार की रक्षा हो, शरीर अरोग रहेगा । सुख प्राप्त होगा ।

शब्द नं: २२

गउड़ी बैरागणि महला ४ ।। (पंन्ना १६५)

साहु हमारा तूं धणी जैसी तूं रासि देहि तैसी हम लेहि ॥ हरि नामु वणंजह रंग सिउ जे आपि दइआलु होइ देहि ॥१॥ हम वणजारे राम के ॥ हरि वणजु करावै दे रासि रे ॥१॥ रहाउ ॥ लाहा हरि भगति धनु खटिआ हरि सचे साह मनि भाइआ ॥ हरि जपि हरि वखरु लदिआ जमु जागाती नेड़ि न आइआ ॥२॥ होरु वणजु करहि वापारीए अनंत तरंगी दुखु माइआ ॥ ओइ जेहै वणजि हरि लाइआ फलु तेहा तिन पाइआ ॥३॥ हरि हरि वणजु सो जनु करे जिसु क्रिपालु होइ प्रभु देई ॥ जन नानक साहु हरि सेविआ फिरि लेखा मूलि न लेई ॥४॥१॥७॥४५॥

विधि और महात्म

इस शब्द का पाठ ५ बार वणज, वपार आदि करने से पहले करें । वणज

में लाभ होगा ।

शब्द नं: २३

गउड़ी बैरागणि महला ४ ।। (पंन्ना १६५-६६)

जिउ जननी गरभु पालती सुत की करि आसा ॥ वडा होइ धनु खाटि देइ करि भोग बिलासा ॥ तिउ हरि जन प्रीति हरि राखदा दे आपि हथासा ॥१॥ मेरे राम मै मूरख हरि राखु मेरे गुसईआ ॥ जन की उपमा तुझहि वडईआ ॥१॥ रहाउ ॥ मंदरि घरि आनंदु हरि हरि जसु मनि भावै ॥ सभ रस मीठे मुखि लगहि जा हरि गुण गावै ॥ हरि जनु परवारु सधारु है इकीह कुली सभु जगतु छडावै ॥२॥ जो किछु कीआ सो हरि कीआ हरि की वडिआई ॥ हरि जीअ तेरे तूं वरतदा हरि पूज कराई ॥ हरि भगति भंडार लहाइदा आपे वरताई ॥३॥ लाला हाटि विहाझिआ किआ तिसु चतुराई ॥ जे राजि बहाले ता हरि गुलामु घासी कउ हरि नामु कढाई ॥ जनु नानकु हरि का दासु है हरि की वडिआई ॥४॥२॥८॥४६॥

विधि और महात्म

इस शब्द का पाठ ४१ बार रोज करें । प्रमात्मा हर प्रकार की रक्षा करेंगे ।

शब्द नं: २४

गउड़ी गुआरेरी महला ४ ।। (पंन्ना १६६)

किरसाणी किरसाणु करे लोचै जीउ लाइ ॥ हलु जोतै उदमु करे मेरा पुतु धी खाइ ॥ तिउ हरिजनु हरि हरि जपु करे हरि अंति छडाइ ॥१॥ मै मूरख की गति कीजै मेरे राम ॥ गुर सतिगुर सेवा हरि लाइ

हम काम ॥१॥ रहाउ ॥ लै तुरे सउदागरी सउदागरु धावै ॥ धनु खटै आसा करै माइआ मोहु वधावै ॥ तिउ हरि जनु हरि हरि बोलता हरि बोलि सुखु पावै ॥२॥ बिखु संचै हटवाणीआ बहि हाटि कमाइ ॥ मोह झूठु पसारा झूठ का झूठे लपटाइ ॥ तिउ हरि जनि हरि धनु संचिआ हरि खरचु लै जाइ ॥३॥ इहु माइआ मोह कुटंबु है भाइ दूजै फास ॥ गुरमती सो जनु तरै जो दासनि दास ॥ जनि नानकि नामु धिआइआ गुरमुखि परगास ॥४॥३॥९॥४७॥

विधि और महात्म

जो इस शब्द का पाठ खेती बोते समय ५ बार करेगा । उसकी फसल ज्यादा होगी ।

शब्द नं: २५

गउड़ी गुआरेरी महला ५ ।। (पंन्ना १८२-८३)

जा कै वसि खान सुलतान ॥ जा कै वसि है सगल जहान ॥ जा का कीआ सभु किछु होइ ॥ तिस ते बाहरि नाही कोइ ॥१॥ कहु बेनंती अपुने सतिगुर पाहि ॥ काज तुमारे देइ निबाहि ॥१॥ रहाउ ॥ सभ ते ऊच जा का दरबारु ॥ सगल भगत जा का नामु अधारु ॥ सरब बिआपित पूरन धनी ॥ जा की सोभा घटि घटि बनी ॥२॥ जिसु सिमरत दुख डेरा ढहै ॥ जिसु सिमरत जमु किछू न कहै ॥ जिसु सिमरत होत सूके हरे ॥ जिसु सिमरत डूबत पाहन तरे ॥३॥ संत सभा कउ सदा जैकारु ॥ हरि हरि नामु जन प्रान अधारु ॥ कहु नानक मेरी सुणी अरदासि ॥ संत प्रसादि मो कउ नाम निवासि ॥४॥२१॥९०॥

विधि और महात्म

जो इस शब्द का पाठ १००० बार शुक्रवार से लेकर २१ दिन करेगा उस पर हाकम मेहरबान होगा नौकरी में तरक्की होगी ।

शब्द नं: २६

गउड़ी महला ५ ।। (पंन्ना १९४)

सिमरत सुआमी किलविख नासे ॥ सूख सहज आनंद निवासे ॥१॥ राम जना कउ राम भरोसा ॥ नामु जपत सभु मिटिओ अंदेसा ॥१॥ रहाउ ॥ साधसंगि कछु भउ न भराती ॥ गुण गोपाल गाईअहि दिनु राती ॥२॥ करि किरपा प्रभ बंधन छोट॥ चरण कमल की दीनी ओट ॥३॥ कहु नानक मनि भई परतीति ॥ निरमल जसु पीवहि जन नीति ॥४॥७३॥१४२॥

विधि और महात्म

इस शब्द का पाठ ४१ बार रोज करने से चिंता, फिकर, बिमारी मुकद्दमा आदि कष्ट दूर होते हैं ।

शब्द नं: २७

गउड़ी महला ५ ।। (पंन्ना २००)

नेत्र प्रगासु कीआ गुरदेव ॥ भरम गए पूरन भई सेव ॥१॥ रहाउ ॥ सीतला ते रखिआ बिहारी ॥ पारब्रहम प्रभ किरपा धारी ॥१॥ नानक नामु जपै सो जीवै ॥ साधसंगि हरि अंम्रितु पीवै ॥२॥१०३॥१७२॥

विधि और महात्म

इस शब्द का १००० पाठ रविवार को करें तो बालक की सीतला दूर हो

जाएगी, सुख से रहोगे ।

शब्द नं: २८

गउड़ी गुआरेरी महला ५ ।। (पंन्ना १८१)

तूं मेरा सखा तूंही मेरा मीतु ॥ तूं मेरा प्रीतमु तुम संगि हीतु ॥ तूं मेरी पति तूहै मेरा गहणा ॥ तुझ बिनु निमखु न जाई रहणा ॥१॥ तूं मेरे लालन तूं मेरे प्रान ॥ तूं मेरे साहिब तूं मेरे खान ॥१॥ रहाउ ॥ जिउ तुम राखहु तिव ही रहना ॥ जो तुम कहहु सोई मोहि करना ॥ जह पेखउ तहा तुम बसना ॥ निरभउ नामु जपउ तेरा रसना ॥२॥ तूं मेरी नव निधि तूं भंडार॥ रंग रता तूं मनहि अधारु ॥ तूं मेरी सोभा तुम संगि रचीआ ॥ तूं मेरी ओट तूं है मेरा तकीआ ॥३॥ मन तन अंतरि तुही धिआइआ ॥ मरमु तुमारा गुर ते पाइआ ॥ सतिगुर ते द्रिड़िआ इकु एकै ॥ नानक दास हरि हरि हरि टेकै ॥४॥१८॥८७॥

विधि और महात्म

अगर कोई काम किसी कारण रुक जाए तो इस शब्द के २१ दिन नियम से २१ पाठ रोज करने से बिगड़े काम बन जाते हैं ।

शब्द नं: २९

रागु सूही महला ५ घरु ४ ।। १ओ सतिगुर प्रसादि ।। (पंन्ना ७४५)

भली सुहावी छापरी जा महि गुन गाए ॥ कित ही कामि न धउलहर जितु हरि बिसराए ॥१॥ रहाउ ॥ अनदु गरीबी साधसंगि जितु प्रभ चिति आए॥ जलि जाउ एहु बडपना माइआ लँपटाए ॥१॥ पीसनु पीसि ओढि कामरी सुखु मनु संतोखाए॥ ऐसो राजु न कितै

काजि जितु नह त्रिपताए ॥२॥ नगन फिरत रंगि एक कै ओहु सोभा पाए॥ पाट पटंबर बिरथिआ जिह रचि लोभाए॥३॥ सभु किछु तुम्हरै हाथि प्रभ आपि करे कराए॥ सासि सासि सिमरत रहा नानक दानु पाए ॥४॥१॥४१॥

विधि और महात्म

जो व्यक्ति इस शब्द के ३१ पाठ सुबह चढ़ते सूर्य की तरफ मुंह करके ३१ दिन करेगा उसको राज दरबार में या नगर ग्राम में बड़ी पदवी व सत्कार मिलेगा। घर में सब को सुख प्राप्त होगा।

शब्द नं: ३०

सलोक महला ९ ॥ (पंन्ना १४२६)

१ओ सतिगुर प्रसादि ॥

गुन गोबिंन्द गाइओ नही जनमु अकारथ कीनु॥ कहु नानक हरि भजु मना जिह बिधि जल कउ मीनु ॥१॥ बिखिअन सिउ काहे रचिओ निमख न होहि उदासु॥ कहु नानक भजु हरि मना परै न जम की फास ॥२॥ तरनापो इउ ही गइओ लीओ जरा तनु जीति॥ कहु नानक भजु हरि मना अउध जातु है बीति ॥३॥ बिरधि भइओ सुझै नही कालु पहूचिओ आनि॥ कहु नानक नर बावरे किउ न भजै भगवानु ॥४॥

विधि और महात्म

इस शब्द को रोजाना सुबह ५ बार पढ़ने से मन गुरू चरणों में जुड़ता है। सुख मिलता है।

शब्द नं: ३१

टोडी महला ५ ।। (पन्ना ७१३)

सतिगुर आइओ सरणि तुहारी ॥ मिलै सूखु नामु हरि सोभा चिंता लाहि हमारी ॥१॥ रहाउ ॥ अवर न सूझै दूजी ठाहर हारि परिओ तउ दुआरी ॥ लेखा छोडि अलेखै छूटह हम निरगुन लेहु उबारी ॥१॥ सद बखसिंदु सदा मिहरवाना सभना देइ अधारी ॥ नानक दास संत पाछै परिओ राखि लेहु इह बारी ॥२॥४॥९॥

विधि और महात्म

इस शब्द का ४० दिन हर रोज ४० बार पाठ करो । सभी प्रकार की चिंता दूर होगी ।

शब्द नं: ३२

बिलावलु महला ५ छंत १ ओ सतिगुर प्रसादि ।। (पन्ना ८४५)

मंगल साजु भइआ प्रभु अपना गाइआ राम ॥ अबिनासी वरु सुणिआ मनि उपजिआ चाइआ राम ॥ मनि प्रीति लागै वडै भागै कब मिलीऐ पूरन पते ॥ सहजे समाईऐ गोविंदु पाईऐ देहु सखीए मोहि मते ॥ दिनु रैणि ठाढी करउ सेवा प्रभु कवन जुगती पाइआ ॥ बिनवंति नानक करहु किरपा लैहु मोहि लड़ि लाइआ ॥१॥

विधि और महात्म

इस शब्द को ५१ बार हर रोज २१ दिन जपने से घर में सभी रोग दूर हो जाएंगे और खुशियों का वातावरण बन जाएगा ।

शब्द नं: ३३

बिलावलु महला ५ ।। (पंन्ना ८२५)

ताप पाप ते राखे आप ॥ सीतल भए गुर चरनी लागे राम नाम हिरदे महि जाप ॥१॥ रहाउ ॥ करि किरपा हसत प्रभि दीने जगत उधार नव खंड प्रताप ॥ दुख बिनसे सुख अनद प्रवेसा त्रिसन बुझी मन तन सचु धाप ॥१॥ अनाथ को नाथु सरणि समरथा सगल स्रिसटि को माई बापु ॥ भगति वछल भै भंजन सुआमी गुण गावत नानक आलाप ॥२॥२०॥१०६॥

विधि और महात्म

यह शब्द हर रोज़ ११ दिन जपते रहने से दुःख दर्द दूर होता है । कोई पाप संताप नहीं छूता ।

शब्द नं: ३४

बिलावलु महला ५ ॥ (पंन्ना ८१६)

जीअ जंत सुप्रसंन भए देखि प्रभ परताप ॥ करजु उतारिआ सतिगुरू करि आहरु आप ॥१॥ खात खरचत निबहत रहै गुर सबदु अखूट ॥ पूरन भई समगरी कबहू नही तूट ॥१॥ रहाउ ॥ साधसंगि आराधना हरि निधि आपार ॥ धरम अरथ अरु काम मोख देते नही बार ॥२॥ भगत अराधहि एक रंगि गोबिंद गुपाल ॥ राम नाम धनु संचिआ जा का नही सुमारु ॥३॥ सरनि परे प्रभ तेरीआ प्रभ की वडिआई ॥ नानक अंतु न पाईऐ बेअंत गुसाई ॥४॥३२॥६२॥

विधि और महात्म

इस शब्द को १० दिनों में २१ हजार जपना। सिर पर चड़ा कर्ज उतर जाता है। घर में माया की लहिर बहिर होती है। किसी चीज की कमी नहीं रहती। सुखी हो जाता है।

शब्द नं: ३५

रागु सूही असटपदीआ महला १ घरु १ (पंन्ना ७५०)

१ओ सतिगुर प्रसादि ॥

सभि अवगण मै गुणु नही कोई ॥ किउ करि कंत मिलावा होई ॥१॥ ना मै रूपु न बंके नैणा ॥ ना कुल ढंगु न मीठे बैणा ॥१॥ रहाउ ॥ सहजि सीगार कामणि करि आवै ॥ ता सोहागणि जा कंतै भावै ॥२॥ ना तिसु रूपु न रेखिआ काई ॥ अंति न साहिबु सिमरिआ जाई ॥३॥ सुरति मति नाही चतुराई ॥ करि किरपा प्रभ लावहु पाई ॥४॥ खरी सिआणी कंत न भाणी ॥ माइआ लागी भरमि भुलाणी ॥५॥ हउमै जाई ता कंत समाई ॥ तउ कामणि पिआरे नव निधि पाई ॥६॥ अनिक जनम बिछुरत दुखु पाइआ ॥ करु गहि लेहु प्रीतम प्रभ राइआ ॥७॥ भणति नानकु सहु है भी होसी ॥ जै भावै पिआरा तै रावेसी ॥८॥१॥

विधि और महात्म

इस शब्द का चानणे पक्ष के २१ दिनों में १०,००० पाठ सम्पूर्ण करें। घर में नराज हुआ पति घर वापस आता है। दोनों में प्यार बढ़ता है।

शब्द नं: ३६

पउड़ी ।। (पंन्ना १४९)

सतिगुरु होइ दइआलु त सरधा पूरीऐ ॥ सतिगुरु होइ दइआलु न कबहूं झूरीऐ ॥ सतिगुरु होइ दइआलु ता दुखु न जाणीऐ ॥ सतिगुरु होइ दइआलु ता हरि रंगु माणीऐ ॥ सतिगुरु होइ दइआलु ता जम का डरु केहा ॥ सतिगरु होइ दइआलु ता सद ही सुखु देहा ॥ सतिगुरु होइ दइआलु ता नव निधि पाईऐ ॥ सतिगुरु होइ दइआलु त सचि समाईऐ ॥२५॥

विधि और महात्म

इस शब्द का पाठ ४१ दिन अमृत समय रोजाना ४१ बार करने से घर में नौ निधियां और अठारह सिधियां आ जाती हैं । सतिगुरू की कृपा होती है ।

शब्द नं: ३७

सोरठि महला ५ ।। (पंन्ना ६२२-२३)

ठाढि पाई करतारे ॥ तापु छोडि गइआ परवारे ॥ गुरि पूरै है राखी ॥ सरणि सचे की ताकी ॥१॥ परमेसरु आपि होआ रखवाला ॥ सांति सहज सुख खिन महि उपजे मनु होआ सदा सुखाला ॥ रहाउ ॥ हरि हरि नामु दीओ दारू ॥ तिनि सगला रोगु बिदारू ॥ अपणी किरपा धारी ॥ तिनि सगली बात सवारी ॥२॥ प्रभि अपना बिरदु समारिआ ॥ हमरा गुणु अवगुणु न बीचारिआ ॥ गुर का सबदु भइओ साखी ॥ तिनि सगली लाज राखी ॥३॥ बोलाइआ बोली तेरा ॥ तू साहिबु गुणी गहेरा ॥ जपि नानक नामु सचु साखी ॥ अपुने

दास की पैज राखी ॥४॥६॥५६॥

विधि और महात्म

जब सभी इलाज कर चुके, ठीक न हो और दवाई का भी कोई असर न हो तो इस शब्द को २१ बार १०८ दिन हर रोज जपने से दवाई असर करने लगेगी। सभी रोग नवृत हो जाएंगे। इस शब्द का मंतरा हुआ जल जिस रोगी को भी दिया जाएगा सभी कष्ट दूर हो जाते हैं।

शब्द नं: ३८

धनासरी महला ५ ॥ (पंन्ना ६८२)

अउखी घड़ी न देखण देई अपना बिरदु समाले ॥ हाथ देइ राखै अपने कउ सासि सासि प्रतिपाले ॥१॥ प्रभ सिउ लागि रहिओ मेरा चीतु ॥ आदि अंति प्रभु सदा सहाई धंनु हमारा मीतु ॥ रहाउ ॥ मनि बिलास भए साहिब के अचरज देखि बडाई ॥ हरि सिमरि सिमरि आनद करि नानक प्रभि पूरन पैज रखाई ॥२॥१५॥४६॥

विधि और महात्म

यह शब्द ५१ दिन ५१ बार हर रोज जपने से कठिन कार्य आसान हो जाएगा। सभी इच्छाएं पूरी हो जाती हैं। गर्भवती स्त्री जपे तो बच्चा बिना कष्ट के हो जाता है।

शब्द नं: ३९

आसा घरु ७ महला ५ ॥ (पंन्ना ३९४)

हरि का नामु रिदै नित धिआई ॥ संगी साथी सगल तरांई ॥१॥ गुरु मेरै संगि सदा है नाले ॥ सिमरि सिमरि तिसु सदा सम्हाले ॥१॥

रहाउ ॥ तेरा कीआ मीठा लागै ॥ हरि नामु पदारथु नानकु मांगै ॥२॥४२॥९३॥

विधि और महात्म

इस शब्द को २१ बार जपने से प्रमात्मा का भाणा मीठा लगता है। सभ संगी साथी सहाई होते हैं।

शब्द नं: ४०

रागु धनासिरी महला ३ घरु ४ (पंन्ना ६६६)

१ओ सतिगुर प्रसादि ॥

हम भीखक भेखारी तेरे तू निज पति है दाता॥ होहु दैआल नामु देहु मंगत जन कंउ सदा रहउ रंगि राता॥१॥ हंउ बलिहारै जाउ साचे तेरे नाम विटहु ॥ करण कारण सभना का एको अवरु न दूजा कोई ॥१॥ रहाउ ॥ बहुते फेर पए किरपन कउ अब किछु किरपा कीजै ॥ होहु दइआल दरसनु देहु अपुना ऐसी बखस करीजै ॥२॥ भनति नानक भरम पट खूल्हे गुर परसादी जानिआ ॥ साची लिव लागी है भीतरि सतिगुर सिउ मनु मानिआ ॥३॥१॥९॥

विधि और महात्म

यह शब्द ११ दिन ११ बार हर रोज़ जपो। भ्रम नष्ट होकर हृदय निर्मल हो जाता है। सभी रोग व बंधन नवृत हो जाते हैं।

शब्द नं: ४१

सलोक सहसक्रिती म: ५ ॥ (पंन्ना १३५५)

पाछं करोति अग्रणीवह निरासं आस पूरनह ॥ निरधन भयं

धनवंतह रोगीअं रोग खंडनह ॥ भगत्यं भगति दानं राम नाम गुण कीरतनह ॥ पारब्रहम पुरख दातारह नानक गुर सेवा किं न लभ्यते ॥२०॥

विधि और महात्म

इस शब्द को शुक्रवार से ४० दिन १०८ बार रोज़ जपना। अगर रोज़ नेम से जपें तो मन की सभी मुरादें पूर्ण होती हैं।

शब्द नं: ४२

गउड़ी बैरागणि महला १ ॥ (पंन्ना १५७)

हरणी होवा बनि बसा क्रंद मूल चुणि खाउ ॥ गुर परसादी मेरा सहु मिलै वारि वारि हउ जाउ जीउ ॥१॥ मै बनजारनि राम की ॥ तेरा नामु वखरु वापारु जी ॥१॥ रहाउ ॥ कोकिल होवा अंबि बसा सहजि सबद बीचारु ॥ सहजि सुभाइ मेरा सहु मिलै दरसनि रूपि अपारु ॥२॥ मछुली होवा जलि बसा जीअ जंत सभि सारि ॥ उरवारि पारि मेरा सहु वसै हउ मिलउगी बाह पसारि ॥३॥ नागनि होवा धर वसा सबदु वसै भउ जाइ ॥ नानक सदा सोहागणी जिन जोती जोति समाइ ॥४॥२॥१९॥

विधि और महात्म

इस शब्द के सिद्ध होने से पुरुष की हर प्रकार आशा पूरी हो जाती है। इसके ११ पाठ प्रातः काल रोज़ २१ दिन करने इस काम के लिए ज़रूरी हैं। पाठ करते समय श्री गुरू नानक देव जी का ध्यान हृदय में रखना चाहिए, और कार्य सिद्धि के लिए प्रार्थना करनी चाहिए।

शब्द नं: ४३

माझ महला ५ ।। (पंन्ना १०१)

निधि सिधि रिधि हरि हरि हरि मेरै ॥ जनमु पदारथु गहिर गंभीरै ॥ लाख कोट खुसीआ रंग रावै जो गुर लागा पाई जीउ ॥१॥ दरसनु पेखत भए पुनीता ॥ सगल उधारे भाई मीता ॥ अगम अगोचरु सुआमी अपुना गुर किरपा ते सचु धिआई जीउ ॥२॥ जा कउ खोजहि सरब उपाए ॥ वडभागी दरसनु को विरला पाए ॥ ऊच अपार अगोचर थाना ओहु महलु गुरू देखाई जीउ ॥३॥ गहिर गंभीर अंम्रित नामु तेरा ॥ मुकति भइआ जिसु रिदै वसेरा ॥ गुरि बंधन तिन के सगले काटे जन नानक सहजि समाई जीउ ॥४॥१६॥२३॥

विधि और महात्म

इस शब्द को पहिर रात रहते पूरब की ओर मूंह कर के १०० दिन में १०० बार रोज जपना । धन की प्राप्ति होगी और हर प्रकार की संपती मिलेगी ।

शब्द नं: ४४

गूजरी महला ५ ।। (पंन्ना ४९५)

हरि धनु जाप हरि धनु ताप हरि धनु भोजनु भाइआ ॥ निमख न बिसरउ मन ते हरि हरि साधसंगति महि पाइआ ॥१॥ माई खाटि आइओ घरि पूता ॥ हरि धनु चलने हरि धनु बैसे हरि धनु जागत सूता ॥१॥ रहाउ ॥ हरि धनु इसनानु हरि धनु गिआनु हरि संगि लाइ धिआना ॥ हरि धनु तुलहा हरि धनु बेड़ी हरि हरि तारि पराना ॥२॥ हरि धन मेरी चिंत विसारी हरि धनि लाहिआ धोखा ॥ हरि धन ते

मै नव निधि पाई हाथि चरिओ हरि थोका ॥३॥ खावहु खरचहु तोटि न आवै हलत पलत कै संगे ॥ लादि खजाना गुरि नानक कउ दीआ इहु मनु हरि रंगि रंगे ॥४॥२॥३॥

विधि और महात्म

इस शब्द के नितप्रति १० पाठ करने से धन की प्राप्ति होती है । इस से गुरू जी की अपार कृपा होती है ।

शब्द नं: ४५

आसा महला ४ ।। (पन्ना ११)

तूं करता सचिआरु मैडा सांई ॥ जो तउ भावै सोई थीसी जो तूं देहि सोई हउ पाई ॥१॥ रहाउ ॥ सभ तेरी तूं सभनी धिआइआ ॥ जिस नो क्रिपा करहि तिनि नाम रतनु पाइआ ॥ गुरमुखि लाधा मनमुखि गवाइआ ॥ तुधु आपि विछोड़िआ आपि मिलाइआ ॥१॥ तूं दरीआउ सभ तुझ ही माहि ॥ तुझ बिनु दूजा कोई नाहि ॥ जीअ जंत सभि तेरा खेलु ॥ विजोगि मिलि विछुड़िआ संजोगी मेलु ॥२॥ जिस नो तू जाणाइहि सोई जनु जाणै ॥ हरि गुण सद ही आखि वखाणै ॥ जिनि हरि सेविआ तिनि सुखु पाइआ ॥ सहजे ही हरि नामि समाइआ ॥३॥ तू आपे करता तेरा कीआ सभु होइ ॥ तुधु बिनु दूजा अवरु न कोइ ॥ तू करि करि वेखहि जाणहि सोइ ॥ जन नानक गुरमुखि परगटु होइ ॥४॥२॥

विधि और महात्म

इस शब्द का पाठ अमृत समय ४ बजे तड़के ११०० हर रोज १८ दिन

करना । इस के फल स्वरूप बहुत धन हीरे जवाहरात की स्वभावक अपने आप सुते सिध ही प्राप्ति होगी । मन को शुद्ध और टिका कर बुरे कामों से रोकने से शब्द के फल की प्राप्ति शीघ्र होती है ।

शब्द नं: ४६

धनासरी बाणी भगतां की ।। धंना ।। (पंन्ना ६९५)

गोपाल तेरा आरता ॥ जो जन तुमरी भगति करंते तिन के काज सवारता ॥१॥ रहाउ ॥ दालि सीधा मागउ घीउ ॥ हमरा खुसी करै नित जीउ ॥ पन्हीआ छादनु नीका ॥ अनाजु मगउ सत सी का ॥१॥ गऊ भैस मगउ लावेरी ॥ इक ताजनि तुरी चंगेरी ॥ घर की गीहनि चंगी ॥ जनु धंना लेवै मंगी ॥२॥४॥

विधि और महात्म

इस शब्द के २१ दिन शाम को ११ पाठ रोज़ करने से पाठ करने वाले के घर पशु धन की कोई कमी नहीं रहेगी । दु:ख, भूख व गरीबी दूर हो जाएगी ।

शब्द नं: ४७

१ओं सतिगुर प्रसादि ।।

सिरी रागु महला पहिला घरु १ ।। (पंन्ना १४)

मोती त मंदर ऊसरहि रतनी त होहि जड़ाउ ॥ कसतूरि कुंगू अगरि चंदनि लीपि आवै चाउ ॥ मतु देखि भूला वीसरै तेरा चिति न आवै नाउ ॥१॥ हरि बिनु जीउ जलि बलि जाउ ॥ मै आपणा गुरु पूछि देखिआ अवरु नाही थाउ ॥१॥ रहाउ ॥ धरती त हीरे लाल जड़ती

पलघि लाल जड़ाउ ॥ मोहणी मुखि मणी सोहै करे रंगि पसाउ ॥ मतु देखि भूला वीसरै तेरा चिति न आवै नाउ ॥२॥

विधि और महात्म

न्या मकान बनाने से पहले या सौदागरी जाते समय या खेती बीजते समय इस शब्द का १००० पाठ करें तो इन में अत्यन्त लाभ होगा ।

शब्द नं: ४८

सिरीरागु महला १ ॥ (पंन्ना १६)

जालि मोहु घसि मसु करि मति कागदु करि सारु ॥ भाउ कलम करि चितु लेखारी गुर पुछि लिखु बीचारु ॥ लिखु नामु सालाह लिखु लिखु अंतु न पारावारु ॥१॥ बाबा एहु लेखा लिखि जाणु ॥ जिथै लेखा मंगीऐ तिथै होइ सचा नीसाणु ॥१॥ रहाउ ॥ जिथै मिलहि वडिआईआ सद खुसीआ सद चाउ ॥ तिन मुखि टिके निकलहि जिन मनि सचा नाउ ॥ करमि मिलै ता पाईऐ नाही गली वाउ दुआउ ॥२॥ इकि आवहि इकि जाहि उठि रखीअहि नाव सलार ॥ इकि उपाए मंगते इकना वडे दरवार ॥ अगै गइआ जाणीऐ विणु नावै वेकार ॥३॥ भै तेरै डरु अगला खपि खपि छिजै देह ॥ नाव जिना सुलतान खान होदे डिठे खेह ॥ नानक उठी चलिआ सभि कूड़े तुटे नेह ॥४॥६॥

विधि और महात्म

इस शब्द का पाठ ५००० बार, लड़कों को पढ़ाते समय करें । लड़के का पढ़ाई में मन लगे और उच्च शिक्षा प्राप्त करे ।

शब्द नं: ४९

सिरीरागु महला १ ॥ (पंन्ना २२-२३)

वणजु करहु वणजारिहो वखरु लेहु समालि ॥ तैसी वसतु विसाहीऐ जैसी निबहै नालि ॥ अगै साहु सुजाणु है लैसी वसतु समालि ॥१॥ भाई रे रामु कहहु चितु लाइ ॥ हरि जसु वखरु लै चलहु सहु देखै पतीआइ ॥१॥ रहाउ ॥ जिना रासि न सचु है किउ तिना सुखु होइ ॥ खोटै वणजि वणंजिऐ मनु तनु खोटा होइ ॥ फाही फाथे मिरग जिउ दूखु घणो नित रोइ ॥२॥ खोटे पोतै ना पवहि तिन हरि गुर दरसु न होइ ॥ खोटे जाति न पति है खोटि न सीझसि कोइ ॥ खोटे खोटु कमावणा आइ गइआ पति खोइ ॥३॥ नानक मनु समझाईऐ गुर कै सबदि सालाह ॥ राम नाम रंगि रतिआ भारु न भरमु तिनाह ॥ हरि जपि लाहा अगला निरभउ हरि मन माह ॥४॥२३॥

विधि और महात्म

जिस समय ज्यादा मुश्कल बने तो इस शब्द को १०० बार हर रोज करें। हर प्रकार की विप्ता, मुश्कल आदि दूर होगी।

शब्द नं: ५०

माझ महला ५ ॥ (पंन्ना ९८)

खोजत खोजत दरसन चाहे ॥ भाति भाति बन बन अवगाहे ॥ निरगुणु सरगुणु हरि हरि मेरा कोई है जीउ आणि मिलावै जीउ ॥१॥ खटु सासत बिचरत मुखि गिआना ॥ पूजा तिलकु तीरथ इसनाना ॥ निवली करम आसन चउरासीह इन महि सांति न आवै जीउ ॥२॥

अनिक बरख कीए जप तापा ॥ गवनु कीआ धरती भरमाता ॥ इकु खिनु हिरदै सांति न आवै जोगी बहुड़ि बहुड़ि उठि धावै जीउ ॥३॥ करि किरपा मोहि साधु मिलाइआ ॥ मनु तनु सीतलु धीरजु पाइआ ॥ प्रभु अबिनासी बसिआ घट भीतरि हरि मंगलु नानकु गावै जीउ ॥४॥५॥१२॥

विधि और महात्म

इस शब्द का ४० दिन रविवार से लेकर नितप्रति ५० बार रोज़ पाठ करने से आप जिस को वश में करना चाहो वह भली प्रकार वश में होगा ।

शब्द नं: ५१

माझ महला ५ ॥ (पंन्ना १०१)

प्रभ किरपा ते हरि हरि धिआवउ ॥ प्रभू दइआ ते मंगलु गावउ ॥ ऊठत बैठत सोवत जागत हरि धिआईऐ सगल अवरदा जीउ ॥१॥ नामु अउखधु मो कउ साधू दीआ ॥ किलबिख काटे निरमलु थीआ ॥ अनदु भइआ निकसी सभ पीरा सगल बिनासे दरदा जीउ ॥२॥ जिस का अंगु करे मेरा पिआरा ॥ सो मुकता सागर संसारा ॥ सति करे जिनि गुरू पछाता सो काहे कउ डरदा जीउ ॥३॥ जब ते साधू संगति पाए ॥ गुर भेटत हउ गई बलाए ॥ सासि सासि हरि गावै नानकु सतिगुर ढाकि लीआ मेरा पड़दा जीउ ॥४॥१७॥२४॥

विधि और महात्म

इस शब्द का पाठ रविवार से लेकर २१ दिन रोज २१ बार करने से सभी रोग दूर हो जाते हैं और मन चाहा सुख प्राप्त हो जाता है ।

शब्द नं: ५२

गउड़ी महला ५ ।। (पंन्ना १९७)

बाहरि राखिओ रिदै समालि ॥ घरि आए गोविंदु लै नालि ॥१॥ हरि हरि नामु संतन कै संगि ॥ मनु तनु राता राम कै रंगि ॥१॥ रहाउ ॥ गुर परसादी सागरु तरिआ ॥ जनम जनम के किलविख सभि हिरिआ ॥२॥ सोभा सुरति नामि भगवंतु ॥ पूरे का निरमल मंतु ॥३॥ चरण कमल हिरदे महि जापु ॥ नानकु पेखि जीवै परतापु ॥४॥८८॥१५७॥

विधि और महात्म

जो इस शब्द का पाठ १० बार नदी पार करते समय करेगा, उसे सब प्रकार की रक्षा होगी ।

शब्द नं: ५३

गउड़ी पूरबी महला ५ ।। (पंन्ना २१२-१३)

मेरे मन सरणि प्रभू सुख पाए ॥ जा दिनि बिसरै प्रान सुखदाता सो दिनु जात अजाए ॥१॥ रहाउ ॥ एक रैण के पाहुन तुम आए बहु जुग आस बधाए ॥ ग्रिह मंदर संपै जो दीसै जिउ तरवर की छाए ॥१॥ तनु मेरा संपै सभ मेरी बाग मिलख सभ जाए ॥ देवनहारा बिसरिओ ठाकुरु खिन महि होत पराए ॥२॥ पहिरै बागा करि इसनाना चोआ चंदन लाए ॥ निरभउ निरंकार नही चीनिआ जिउ हसती नावाए ॥३॥ जउ होइ क्रिपाल त सतिगुरु मेलै सभि सुख हरि के नाए ॥ मुकतु भइआ बंधन गुरि खोले जन नानक हरि गुण गाए ॥४॥१४॥१५२॥

विधि और महात्म

इस शब्द का पाठ २१ दिन हर रोज़ ४० बार रविवार से शुरू करें तो दुःख में भी वाहिगुरू जी आप सहाई होंगे ।

शब्द नं: ५४

गउड़ी सुखमनी महला ५ ।। (पंन्ना २६३)

हरि सिमरनु करि भगत प्रगटाए ॥ हरि सिमरनि लगि बेद उपाए ॥ हरि सिमरनि भए सिध जती दाते ॥ हरि सिमरनि नीच चहु कुंट जाते ॥ हरि सिमरनि धारी सभ धरना ॥ सिमरि सिमरि हरि कारन करना ॥ हरि सिमरनि कीओ सगल अकारा ॥ हरि सिमरन महि आपि निरंकारा ॥ करि किरपा जिसु आपि बुझाइआ ॥ नानक गुरमुखि हरि सिमरनु तिनि पाइआ ॥८॥१॥

विधि और महात्म

इस शब्द का पाठ रोज ५० बार करने से बुद्धिमान हो जाता है । जहां बोले विद्वान कहलाए ।

शब्द नं: ५५

गउड़ी सुखमनी महला ५ ।। (पंन्ना २६४)

जिह मारग के गने जाहि न कोसा ॥ हरि का नामु ऊहा संगि तोसा ॥ जिह पैडै महा अंध गुबारा ॥ हरि का नामु संगि उजीआरा ॥ जहा पंथि तेरा को न सिञानू ॥ हरि का नामु तह नालि पछानू ॥ जह महा भइआन तपति बहु घाम ॥ तह हरि के नाम की तुम ऊपरि

छाम ॥ जहा त्रिखा मन तुझु आकरखै ॥ तह नानक हरि हरि अंम्रितु बरखै ॥४॥

विधि और महात्म

इस शब्द का पाठ किसी सफर पर जाना हो तो चलते समय मुँह में करते जाना, भयानक जंगल में इस का सिमरन करते जाएं तो शेर व बाघ, चीता आदि जंतुओं से रक्षा होगी ।

शब्द नं: ५६

गउड़ी महला ५ मांझ ॥ (पंन्ना २१८)

दुख भंजनु तेरा नामु जी दुख भंजनु तेरा नामु ॥ आठ पहर आराधीऐ पूरन सतिगुर गिआनु ॥१॥ रहाउ ॥ जितु घटि वसै पारब्रहमु सोई सुहावा थाउ ॥ जम कंकरु नेड़ि न आवई रसना हरि गुण गाउ ॥१॥ सेवा सुरति न जाणीआ ना जापै आराधि ॥ ओट तेरी जगजीवना मेरे ठाकुर अगम अगाधि ॥२॥ भए क्रिपाल गुसाईआ नठे सोग संताप ॥ ततो वाउ न लगई सतिगुरि रखे आपि ॥३॥ गुरु नाराइणु दयु गुरु गुरु सचा सिरजणहारु ॥ गुरि तुठै सभ किछु पाइआ जन नानक सद बलिहार ॥४॥२॥१७०॥

विधि और महात्म

यह शब्द सवा महीना हर रोज २१ बार जपने से हर प्रकार के संसारक पदार्थों की प्राप्ति होती है । सब कष्ट दूर होंगे । घर में सुख का वातावरण बना रहेगा । देर से चल रहे मुकद्दमें में जीत प्राप्त होगी । रुके हुए कार्य पूरे होंगे ।

शब्द नं: ५७

डखणे महला ५ ।। पउड़ी ।। (पंन्ना १०९६)

जा तू मेरै वलि है ता किआ मुहछंदा ॥ तुधु सभु किछु मैनो सउपिआ जा तेरा बंदा ॥ लखमी तोटि न आवई खाइ खरचि रहंदा ॥ लख चउरासीह मेदनी सभ सेव करंदा ॥ एह वैरी मित्र सभि कीतिआ नह मंगहि मंदा ॥ लेखा कोइ न पुछई जा हरि बखसंदा ॥ अनंदु भइआ सुखु पाइआ मिलि गुर गोविंदा ॥ सभे काज सवारिऐ जा तुधु भावंदा ॥७॥

विधि और महात्म

इस शब्द को रोजाना ५ बार जपने से दुश्मन भी मित्र बन जाते हैं और मन की चिंता मिट जाती है और इससे घर में बहुत सारा धन आ जाता है ।

शब्द नं: ५८

गउड़ी सुखमनी महला ५ ।। (पंन्ना २६४)

सगल स्रिसटि को राजा दुखीआ ॥ हरि का नामु जपत होइ सुखीआ ॥ लाख करोरी बंधु न परै ॥ हरि का नामु जपत निसतरै ॥ अनिक माइआ रंग तिख न बुझावै ॥ हरि का नामु जपत आघावै ॥ जिह मारगि इहु जात इकेला ॥ तह हरि नामु संगि होत सुहेला ॥ ऐसा नामु मन सदा धिआईऐ ॥ नानक गुरमुखि परम गति पाईऐ ॥२॥

विधि और महात्म

इस पउड़ी को २१ बार हर रोज जपने से सभी संकटों से आप का छुटकारा होकर मान प्राप्त होगा ।

शब्द नं: ५९

आसा महला ५ छंत ।। (पंन्ना ४५७)

मिलउ संतन कै संगि मोहि उधारि लेहु॥ बिनउ करउ कर जोड़ि हरि हरि नामु देहु ॥ हरि नामु मागउ चरण लागउ मानु तिआगउ तुम्ह दइआ ॥ कतहूं न धावउ सरणि पावउ करुणा मै प्रभ करि मइआ॥ समरथ अगथ अपार निरमल सुणहु सुआमी बिनउ एहु ॥ कर जोड़ि नानक दानु मागै जनम मरण निवारि लेहु ॥१॥

विधि और महात्म

यह पउड़ी २१ बार हर रोज पढ़ने से सभी संकटों से छुटकारा मिल जाता है । कैद में पड़ा मनुष्य रिहा होकर मान प्राप्त करता है ।

शब्द नं: ६०

आसा महला ५ ।। (पंन्ना ३८६)

जिसु नीच कउ कोई न जानै ॥ नामु जपत उहु चहु कुंट मानै ॥१॥ दरसनु मागउ देहि पिआरे ॥ तुमरी सेवा कउन कउन न तारे ॥१॥ रहाउ ॥ जा कै निकटि न आवै कोई ॥ सगल स्रिसटि उआ के चरन मलि धोई ॥२॥ जो प्रानी काहू न आवत काम ॥ संत प्रसादि ता को जपीऐ नाम ॥३॥ साधसंगि मन सोवत जागे ॥ तब प्रभ नानक मीठे लागे ॥४॥१२॥६३॥

विधि और महात्म

जो पुरुष इस शब्द के २१ पाठ हर रोज सुबह प्रातःकाल सुर्य चढ़ते की ओर

मुख करके २१ दिन करे वह जगत् में प्रसिद्ध हो जाता है । सब उस को झुक कर सलाम करते हैं ।

शब्द नं: ६१

आसा महला ५ ॥ (पंन्ना ३८७-८८)

उकति सिआनप किछू न जाना ॥ दिनु रैणि तेरा नामु वखाना ॥१॥ मै निरगुन गुणु नाही कोइ ॥ करन करावनहार प्रभ सोइ ॥१॥ रहाउ ॥ मूरख मुगध अगिआन अवीचारी ॥ नाम तेरे की आस मनि धारी ॥२॥ जपु तपु संजमु करम न साधा ॥ नामु प्रभू का मनहि अराधा ॥३॥ किछू न जाना मति मेरी थोरी ॥ बिनवति नानक ओट प्रभ तोरी ॥४॥१८॥६९॥

विधि और महात्म

इस शब्द का पाठ लगातार ६५ दिन तक २१ बार हर रोज प्रात:काल करने से साधारण सी बुद्धि वाला मनुष्य भी बहुत चतुर और अकलमंद बन जाता है । उसे अपने आप ही ऊंची मत प्राप्त हो जाती है और वह बुद्धिमानों की गिणती में आ जाता है ।

शब्द नं: ६२

आसा महला १ चउपदे ॥ (पंन्ना ३५६)

विदिआ वीचारी तां परउपकारी ॥ जां पंच रासी तां तीरथ वासी ॥१॥ घुंघरू वाजै जे मनु लागै ॥ तउ जमु कहा करे मो सिउ आगै ॥१॥ रहाउ ॥ आस निरासी तउ संनिआसी ॥ जां जतु जोगी तां काइआ भोगी ॥२॥ दइआ दिगंबरु देह बीचारी ॥ आपि मरै अवरा

नह मारी ॥३॥ एकु तू होरि वेस बहुतेरे ॥ नानकु जाणै चोज न तेरे ॥४॥२५॥

विधि और महात्म

इस शब्द के ११ पाठ रोज़ करने से विद्या बहुत प्राप्त होती है। गुरूवार दशमी थित चानणे पक्ष को प्रातः काल पाठ आरम्भ करें तो बहुत सफलता मिलती है। विद्या पढ़नी आरम्भ करते समय इस शब्द के ५ पाठ करके प्रार्थना करें तो विद्या पढ़नी शुभ हो, विद्या में मन लगा रहे।

शब्द नं: ६३

गउड़ी माझ महला ५ ॥ (पंन्ना २१८)

हरि राम राम राम रामा ॥ जपि पूरन होए कामा ॥१॥ रहाउ ॥ राम गोबिंद जपेदिआ होआ मुखु पवित्रु ॥ हरि जसु सुणीऐ जिस ते सोई भाई मित्रु ॥१॥ सभि पदारथ सभि फला सरब गुणा जिसु माहि ॥ किउ गोबिंदु मनहु विसारीऐ जिसु सिमरत दुख जाहि ॥२॥ जिसु लड़ि लगिऐ जीवीऐ भवजलु पईऐ पारि ॥ मिलि साधू संगि उधारु होइ मुख ऊजल दरबारि ॥३॥ जीवन रूप गोपाल जसु संत जना की रासि ॥ नानक उबरे नामु जपि दरि सचै साबासि ॥४॥३॥१७१॥

विधि और महात्म

यह शब्द ४१ दिन ४१ बार हर रोज़ जपने से सभी मनोकामनाएं पूर्ण होती हैं। संसार में मान इज्जत बढ़ता है।

शब्द नं: ६४

आसा महला ५ ॥ (पंन्रा ३७२)

परदेसु झागि सउदे कउ आइआ ॥ वसतु अनूप सुणी लाभाइआ ॥ गुण रासि बंन्हि पलै आनी ॥ देखि रतनु इहु मनु लपटानी ॥१॥ साह वापारी दुआरै आए॥ वखरु काढहु सउदा कराए ॥१॥ रहाउ ॥ साहि पठाइआ साहै पासि ॥ अमोल रतन अमोला रासि ॥ विसटु सुभाई पाइआ मीत ॥ सउदा मिलिआ निहचल चीत ॥२॥ भउ नही तसकर पउण न पानी ॥ सहजि विहाझी सहजि लै जानी ॥ सत कै खटिऐ दुखु नही पाइआ ॥ सही सलामति घरि लै आइआ ॥३॥ मिलिआ लाहा भए अनंद ॥ धंनु साह पूरे बखसिंद ॥ इहु सउदा गुरमुखि किनै विरलै पाइआ ॥ सहली खेप नानकु लै आइआ ॥४॥६॥

विधि और महात्म

इस शब्द का पाठ बुधवार १० बार करें तो व्यापार में वृद्धि व लाभ होगा । कोई वणज करने लगें तो पहले इस शब्द का पाठ करें । उस सौदे में आवश्य लाभ होगा ।

शब्द नं: ६५

आसा महला ५ ॥ (पंन्रा ३७२)

गुनु अवगनु मेरो कछु न बीचारो ॥ नह देखिओ रूप रंग सींगारो ॥ चज अचार किछु बिधि नही जानी ॥ बाह पकरि प्रिअ सेजै आनी ॥१॥ सुनिबो सखी कंति हमारो कीअलो खसमाना ॥ करु मसतकि

धारि राखिओ करि अपुना किआ जानै इहु लोकु अजाना ॥१॥ रहाउ ॥ सुहागु हमारो अब हुणि सोहिओ ॥ कंतु मिलिओ मेरो सभु दुखु जोहिओ ॥ आंगनि मेरै सोभा चंद ॥ निसि बासुर प्रिअ संगि अनंद ॥२॥ बसत्र हमारे रंगि चलूल ॥ सगल आभरण सोभा कंठि फूल ॥ प्रिअ पेखी द्रिसटि पाए सगल निधान ॥ दुसट दूत की चूकी कानि ॥३॥ सद खुसीआ सदा रंग माणे ॥ नउ निधि नामु ग्रिह महि त्रिपताने ॥ कहु नानक जउ पिरहि सीगारी ॥ थिरु सोहागनि संगि भतारी ॥४॥७॥

विधि और महात्म

इस शब्द के १००० पाठ सोमवार से लेकर ४० दिन तक करो। अगर पुरुष करे तो स्त्री मिलेगी और अगर स्त्री करेगी तो पति मेहरबान होगा। गृहस्थ में सभी सुख प्राप्त होंगे।

शब्द नं: ६६

बिलावलु महला ५ ॥ (पंन्ना ८१९)

ताती वाउ न लगई पारब्रहम सरणाई ॥ चउगिरद हमारै राम कार दुखु लगै न भाई ॥१॥ सतिगुरु पूरा भेटिआ जिनि बणत बणाई ॥ राम नामु अउखधु दीआ एका लिव लाई ॥१॥ रहाउ ॥ राखि लीए तिनि रखनहारि सभ बिआधि मिटाई ॥ कहु नानक किरपा भई प्रभ भए सहाई ॥२॥१५॥७९॥

विधि और महात्म

इस शब्द का २१ दिन १०८ बार हर रोज जाप करने से शरीर की रक्षा होगी।

चोरों का डर दूर होगा। रात को बुरे सपने नहीं आते। सोते समय पांच बार इस शब्द का पाठ करने से सुख की नींद आती है।

शब्द नं: ६७

सोरठि महला ५ ॥ (पंन्ना ६११)

करि इसनानु सिमरि प्रभु अपना मन तन भए अरोगा ॥ कोटि बिघन लाथे प्रभ सरणा प्रगटे भले संजोगा ॥१॥ प्रभ बाणी सबदु सुभाखिआ ॥ गावहु सुणहु पड़हु नित भाई गुर पूरै तू राखिआ ॥ रहाउ ॥ साचा साहिबु अमिति वडाई भगति वछल दइआला ॥ संता की पैज रखदा आइआ आदि बिरदु प्रतिपाला ॥२॥ हरि अंम्रित नामु भोजनु नित भुंचहु सरब वेला मुखि पावहु ॥ जरा मरा तापु सभु नाठा गुण गोबिंद नित गावहु ॥३॥ सुणी अरदासि सुआमी मेरै सरब कला बणि आई ॥ प्रगट भई सगले जुग अंतरि गुर नानक की वडिआई ॥४॥११॥

विधि और महात्म

इस शब्द का पाठ ४१ बार हर रोज करने से हर प्रकार के कष्ट दूर होते हैं।

शब्द नं: ६८

सलोक महला ५ ॥ (पंन्ना १४२६)

तिचरु मूलि न थुड़ीदो जिचरु आपि क्रिपालु ॥ सबदु अखुटु बाबा नानका खाहि खरचि धनु मालु ॥२०॥

विधि और महात्म

इस सलोक का पाठ सोमवार से आरम्भ कर पचास लाख करना। इस शब्द को सिद्ध कर लेने से भंडारे में कभी तोट नहीं आती। घर में दौलत की कमी नहीं आएगी। सभी पदार्थ आने लग पड़ेंगे।

शब्द नं: ६९

सोरठि महला ५ ॥ (पंन्ना ६१९)

गए कलेस रोग सभि नासे प्रभि अपुनै किरपा धारी॥ आठ पहर आराधहु सुआमी पूरन घाल हमारी॥१॥ हरि जीउ तू सुख संपति रासि॥ राखि लैहु भाई मेरे कउ प्रभ आगै अरदासि॥ रहाउ॥ जो मागउ सोई सोई पावउ अपने खसम भरोसा॥ कहु नानक गुरु पूरा भेटिओ मिटिओ सगल अंदेसा॥२॥१४॥४२॥

विधि और महात्म

इस शब्द के २१ दिन रोज २१ पाठ करने से हर तरह के मानसिक, शरीरक और घरोगी कलेश नविृत हो जाते हैं।

शब्द नं: ७०

आसा महला ५ ॥ (पंन्ना ३८३)

तूं विसरहि तां सभु को लागू चीति आवहि तां सेवा॥ अवरु न कोऊ दूजा सूझै साचे अलख अभेवा॥१॥ चीति आवै तां सदा दइआला लोगन किआ वेचारे॥ बुरा भला कहु किस नो कहीऐ सगले जीअ तुम्हारे॥१॥ रहाउ॥ तेरी टेक तेरा आधारा हाथ देइ तूं राखहि॥ जिसु जन ऊपरि तेरी किरपा तिस कउ बिपु न कोऊ भाखै

॥२॥ ओहो सुखु ओहा वडिआई जो प्रभ जी मनि भाणी ॥ तूं दाना तूं सद मिहरवाना नामु मिलै रंगु माणी ॥३॥ तुधु आगै अरदासि हमारी जीउ पिंडु सभु तेरा ॥ कहु नानक सभ तेरी वडिआई कोई नाउ न जाणै मेरा ॥४॥१०॥४९॥

विधि और महात्म

इस बिनती के शब्द का पाठ ५ बार हमेशां करें या हर समय करें । अकाल पुरख हर प्रकार की रक्षा करेंगे । दुःख, कलेश, मुकद्दमा, बिमारी आदि विप्ता से हर प्रकार की रक्षा होगी ।

शब्द नं: ७१

तिलंग महला ५ घरु ३ ॥ (पंन्ना ७२४)

मिहरवानु साहिबु मिहरवानु ॥ साहिबु मेरा मिहरवानु ॥ जीअ सगल कउ देइ दानु ॥ रहाउ ॥ तू काहे डोलहि प्राणीआ तुधु राखैगा सिरजणहारु ॥ जिनि पैदाइसि तू कीआ सोई देइ आधारु ॥१॥ जिनि उपाई मेदनी सोई करदा सार ॥ घटि घटि मालकु दिला का सचा परवदगारु ॥२॥ कुदरति कीम न जाणीऐ वडा वेपरवाहु ॥ करि बंदे तू बंदगी जिचरु घट महि साहु ॥३॥ तू समरथु अकथु अगोचरु जीउ पिंडु तेरी रासि ॥ रहम तेरी सुखु पाइआ सदा नानक की अरदासि ॥४॥३॥

विधि और महात्म

इस शब्द को २१ बार जपने से डोलता मन टिक जाता है । प्रभु पर विश्वास होता है । बेरुजगारी दूर हो जाती है । बहुत अच्छा कारोबार मिल जाता है ।

शब्द नं: ७२

आसा महला ५ ॥ (पंन्ना ३९६)

सतिगुर साचै दीआ भेजि ॥ चिरु जीवनु उपजिआ संजोगि ॥ उदरै माहि आइ कीआ निवासु ॥ माता कै मनि बहुतु बिगासु ॥१॥ जंमिआ पूतु भगतु गोविंद का ॥ प्रगटिआ सभ महि लिखिआ धुर का ॥ रहाउ ॥ दसी मासी हुकमि बालक जनमु लीआ ॥ मिटिआ सोगु महा अनंदु थीआ ॥ गुरबाणी सखी अनंदु गावै ॥ साचे साहिब कै मनि भावै ॥२॥ वधी वेलि बहु पीड़ी चाली ॥ धरम कला हरि बंधि बहाली ॥ मन चिंदिआ सतिगुरू दिवाइआ ॥ भए अचिंत एक लिव लाइआ ॥३॥ जिउ बालकु पिता ऊपरि करे बहु माणु ॥ बुलाइआ बोलै गुर कै भाणि ॥ गुझी छंनी नाही बात ॥ गुरु नानकु तुठा कीनी दाति ॥४॥७॥१०१॥

विधि और महात्म

इस शब्द का पाठ १० बार जन्म के समय करें तो सब प्रकार का आनन्द और खुशी प्राप्त होगी । २१ दिन पाठ १० बार रोज करते रहो तो बालक की हर प्रकार से रक्षा होती है ।

शब्द नं: ७३

आसा महला ५ ॥ (पंन्ना ३९९)

आवहु मीत इकत्र होइ रस कस सभि भुंचह ॥ अंम्रित नामु हरि हरि जपह मिलि पापा मुंचह ॥१॥ ततु वीचारहु संत जनहु ता ते बिघनु न लागै ॥ खीन भए सभि तसकरा गुरमुखि जनु जागै ॥१॥ रहाउ ॥ बुधि गरीबी खरचु लैहु हउमै बिखु जारहु ॥ साचा हटु पूरा सउदा वखरु नामु

वापारहु ॥२॥ जीउ पिंडु धनु अरपिआ सेई पतिवंते ॥ आपनड़े प्रभ भाणिआ नित केल करंते ॥३॥ दुरमति मदु जो पीवते बिखली पति कमली ॥ राम रसाइणि जो रते नानक सच अमली ॥४॥१२॥११४॥

विधि और महात्म

इस शब्द का पाठ ५००० बार रविवार से ले कर चालीस दिन में करें तो सरब सन्बन्धी, मित्र और रिश्तेदार विछड़ों का मिलाप होगा। प्रदेश गए के लिए पाठ करें तो जल्दी आ जाएगा।

शब्द नं: ७४

आसा महला ५ ॥ (पंन्ना ४०३)

अपुने सेवक की आपे राखै आपे नामु जपावै ॥ जह जह काज किरति सेवक की तहा तहा उठि धावै ॥१॥ सेवक कउ निकटी होइ दिखावै ॥ जो जो कहै ठाकुर पहि सेवकु ततकाल होइ आवै ॥१॥ रहाउ ॥ तिसु सेवक कै हउ बलिहारी जो अपने प्रभ भावै ॥ तिस की सोइ सुणी मनु हरिआ तिसु नानक परसणि आवै ॥२॥७॥१२९॥

विधि और महात्म

इस शब्द का पाठ ५ बार हर रोज प्रात:काल करें तो अकाल पुरख हर समय पीड़ा, संकट, मुकद्दमें, रोग आदि में आप की सहायता करेंगे।

शब्द नं: ७५

सोरठि महला ५ ॥ (पंन्ना ६३१)

सुनहु बिनंती ठाकुर मेरे जीअ जंत तेरे धारे ॥ राखु पैज नाम अपुने

की करन करावनहारे ॥१॥ प्रभ जीउ खसमाना करि पिआरे ॥ बुरे भले हम थारे ॥ रहाउ ॥ सुणी पुकार समरथ सुआमी बंधन काटि सवारे ॥ पहिरि सिरपाउ सेवक जन मेले नानक प्रगट पहारे ॥२॥२९॥९३॥

विधि और महात्म

इस शब्द का २१ दिनों में २२,००० पाठ करने से कैद आदि बंधनों से छुटकारा हो जाता है ।

शब्द नं: ७६

सलोक महला ५ ।। (पंन्ना १४२६)

खंभ विकांदड़े जे लहां घिंना सावी तोलि ॥ तंनि जड़ांई आपणै लहां सु सजणु टोलि ॥२१॥

विधि और महात्म

इस शब्द का ४० दिन लगातार पाठ करने से मित्र का मिलाप हो जाता है ।

शब्द नं: ७७

सोरठि महला ५ ॥ (पंन्ना ६१४)

हम संतन की रेनु पिआरे हम संतन की सरणा ॥ संत हमारी ओट सताणी संत हमारा गहणा ॥१॥ हम संतन सिउ बणि आई ॥ पूरबि लिखिआ पाई ॥ इहु मनु तेरा भाई ॥ रहाउ ॥ संतन सिउ मेरी लेवा देवी संतन सिउ बिउहारा ॥ संतन सिउ हम लाहा खाटिआ हरि भगति भरे भंडारा ॥२॥ संतन मो कउ पूंजी सउपी तउ उतरिआ मन

का धोखा ॥ धरम राइ अब कहा करैगो जउ फाटिओ सगलो लेखा ॥३॥ महा अनंद भए सुखु पाइआ संतन कै परसादे ॥ कहु नानक हरि सिउ मनु मानिआ रंगि रते बिसमादे ॥४॥८॥१९॥

विधि और महात्म

इस शब्द का पाठ १० बार रविवार को हमेशां करें । आप का हर प्रकार का दुःख, तकलीफ, संकट अकाल पुरख की सहायता से दूर होगा ।

शब्द नं: ७८

सोरठि महला ५ ।। (पंन्ना ६२४-२५)

गई बहोड़ु बंदी छोड़ु निरंकारु दुखदारी ॥ करमु न जाणा धरमु न जाणा लोभी माइआधारी ॥ नामु परिओ भगतु गोविंद का इह राखहु पैज तुमारी ॥१॥ हरि जीउ निमाणिआ तू माणु ॥ निचीजिआ चीज करे मेरा गोविंदु तेरी कुदरति कउ कुरबाणु ॥ रहाउ ॥ जैसा बालकु भाइ सुभाई लख अपराध कमावै ॥ करि उपदेसु झिड़के बहु भाती बहुड़ि पिता गलि लावै ॥ पिछले अउगुण बखसि लए प्रभु आगै मारगि पावै ॥२॥ हरि अंतरजामी सभ बिधि जाणै ता किसु पहि आखि सुणाईऐ ॥ कहणै कथनि न भीजै गोबिंदु हरि भावै पैज रखाईऐ ॥ अवर ओट मै सगली देखी इक तेरी ओट रहाईऐ ॥३॥ होइ दइआलु किरपालु प्रभु ठाकुरु आपे सुणै बेनंती ॥ पूरा सतगुरु मेलि मिलावै सभ चूकै मन कीचिंती ॥ हरि हरि नामु अवखदु मुखि पाइआ जन नानक सुखि वसंती ॥४॥१२॥६२॥

विधि और महात्म

कोई मनुष्य कैद में फंसा हो या कोई कठिन काम अटका हो तो पिछले पहिर उठकर स्नान करके सतिगुरु नानक देव जी का ध्यान करके ११ पाठ हर रोज करने से कैदी छुटे, मुकद्दमा फतह हो। सभी काम रास आ जाएंगे।

शब्द नं: ७९

आसा महला ५ ॥ (पंन्ना ३९६)

गुर पूरे राखिआ दे हाथ॥ प्रगटु भइआ जन का परतापु॥१॥ गुरु गुरु जपी गुरू गुरु धिआई॥ जीअ की अरदासि गुरू पहि पाई॥ रहाउ॥ सरनि परे साचे गुरदेव॥ पूरन होई सेवक सेव॥२॥ जीउ पिंडु जोबनु राखै प्रान॥ कहु नानक गुर कउ कुरबान॥३॥८॥१०२॥

विधि और महात्म

इस शब्द के २१ दिन रोज अमृत समय ११ पाठ करें। भूत, प्रेत और छाया से रक्षा होगी।

शब्द नं: ८०

सूही महला ५ ॥ (पंन्ना ७८३)

संता के कारजि आपि खलोइआ हरि कंमु **करावणि** आइआ राम॥ धरति सुहावी तालु सुहावा विचि अंम्रित जलु छाइआ राम॥ अंम्रित जलु छाइआ पूरन साजु कराइआ सगल मनोरथ पूरे॥ जै जै कारु भइआ जग अंतरि लाथे सगल विसूरे॥ पूरन पुरख अचुत अबिनासी जसु वेद पुराणी गाइआ॥ अपना बिरदु रखिआ परमेसरि

नानक नामु धिआइआ ॥१॥

विधि और महात्म

इस शब्द को मकान या दुकान बनाते समय ४० दिन ४० बार जपें। मकान व दुकान सुखदायी हो । सभी इच्छाएं पूर्ण होती हैं ।

शब्द नं: ८१

मलार महला ५ ॥ (पंन्ना १२६७)

माई मोहि प्रीतमु देहु मिलाई ॥ सगल सहेली सुख भरि सूती जिह घरि लालु बसाई ॥१॥ रहाउ ॥ मोहि अवगन प्रभु सदा दइआला मोहि निरगुनि किआ चतुराई ॥ करउ बराबरि जो प्रिअ संगि रांती इह हउमै की ढीठाई ॥१॥ भई निमाणी सरनि इक ताकी गुर सतिगुर पुरख सुखदाई ॥ एक निमख महि मेरा सभु दुखु काटिआ नानक सुखि रैनि बिहाई ॥२॥२॥६॥

विधि और महात्म

इस शब्द का २१ दिन पाठ रोज़ाना करने से पति का मिलाप हो जाता है ।

शब्द नं: ८२

गोंड महला ५ ॥ (पंन्ना ८६६)

करि किरपा सुख अनद करेइ ॥ बालक राखि लीए गुरदेवि ॥ प्रभ किरपाल दइआल गुोबिंद ॥ जीअ जंत सगले बखसिंद ॥१॥ तेरी सरणि प्रभ दीन दइआल ॥ पारब्रहम जपि सदा निहाल ॥१॥ रहाउ ॥ प्रभ दइआल दूसर कोई नाही ॥ घट घट अंतरि सरब समाही ॥ अपने

दास का हलतु पलतु सवारै ॥ पतित पावन प्रभ बिरदु तुम्हारै ॥२॥ अउखध कोटि सिमरि गोबिंद ॥ तंतु मंतु भजीऐ भगवंत ॥ रोग सोग मिटे प्रभ धिआए ॥ मन बांछत पूरन फल पाए ॥३॥ करन कारन समरथ दइआर ॥ सरब निधान महा बीचार ॥ नानक बखसि लीए प्रभि आपि ॥ सदा सदा एको हरि जापि ॥४॥१३॥१५॥

विधि और महात्म

इस शब्द का पाठ १० बार हर रोज हर समय करने से आप को हर प्रकार का सुख मिल जाएगा। सभी काम सम्पूर्ण हो जाएंगे। हर समय सहायता होगी। रोग बिमारी मुकद्दमा समाप्त होगा।

शब्द नं: ८३

गोंड महला ५ ॥ (पंन्ना ८६८)

जा कउ राखै राखणहारु ॥ तिस का अंगु करे निरंकारु ॥१॥ रहाउ ॥ मात गरभ महि अगनि न जोहै ॥ कामु क्रोधु लोभु मोहु न पोहै ॥ साधसंगि जपै निरंकारु ॥ निंदक कै मुहि लागै छारु ॥१॥ राम कवचु दास का संनाहु ॥ दूत दुसट तिसु पोहत नाहि ॥ जो जो गरबु करे सो जाइ ॥ गरीब दास की प्रभु सरणाइ ॥२॥ जो जो सरणि पइआ हरि राइ ॥ सो दासु रखिआ अपणै कंठि लाइ ॥ जे को बहुतु करे अहंकारु ॥ ओहु खिन महि रुलता खाकू नालि ॥३॥ है भी साचा होवणहारु ॥ सदा सदा जाईं बलिहार ॥ अपणे दास रखे किरपा धारि ॥ नानक के प्रभ प्राण अधार ॥४॥१८॥२०॥

विधि और महात्म

इस शब्द का पाठ ५ बार हर रोज गर्भवती करे तो गर्भ की रक्षा होगी । मुकद्दमे वाला करे तो कारज सिद्ध हो जाएगा । अकाल पुरख की दया से सभी प्रकार की रक्षा होगी । दुश्मन उस से दूर होंगे ।

शब्द नं: ८४

रागु गोंड बाणी नामदेउ जीउ की घरु २ (पंन्ना ८७४)

भैरउ भूत सीतला धावै ॥ खर बाहनु उहु छारु उडावै ॥१॥ हउ तउ एकु रमईआ लैहउ ॥ आन देव बदलावनि दैहउ ॥१॥ रहाउ ॥ सिव सिव करते जो नरु धिआवै ॥ बरद चढे डउरू ढमकावै ॥२॥ महा माई की पूजा करै ॥ नर सै नारि होइ अउतरै ॥३॥ तू कहीअत ही आदि भवानी ॥ मुकति की बरीआ कहा छपानी ॥४॥ गुरमति राम नाम गहु मीता ॥ प्रणवै नामा इउ कहै गीता ॥५॥२॥६॥

विधि और महात्म

इस शब्द के १० पाठ रोज शनिवार से करें । सभ भूत प्रेतों से रक्षा होगी । कोई भय नहीं लगेगा ।

शब्द नं: ८५

मारू महला ५ घरु ८ अंजुलीआ १ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ (पंन्ना १०१९)

जिसु ग्रिहि बहुतु तिसै ग्रिहि चिंता ॥ जिसु ग्रिहि थोरी सु फिरै भ्रमंता ॥ दुहू बिवसथा ते जो मुकता सोई सुहेला भालीऐ ॥१॥ ग्रिह राज महि नरकु उदास करोधा ॥ बहु बिधि बेद पाठ सभि सोधा ॥

देही महि जो रहै अलिपता तिसु जन की पूरन घालीऐ ॥२॥ जागत सूता भरमि विगूता ॥ बिनु गुर मुकति न होईऐ मीता ॥ साधसंगि तुटहि हउ बंधन एको एकु निहालीऐ ॥३॥ करम करै त बंधा नह करै त निंदा ॥ मोह मगन मनु विआपिआ चिंदा ॥ गुर प्रसादि सुखु दुखु सम जाणै घटि घटि रामु हिआलीऐ ॥४॥ संसारै महि सहसा बिआपै ॥ अकथ कथा अगोचर नही जापै ॥ जिसहि बुझाए सोई बूझै ओहु बालक वागी पालीऐ ॥५॥ छोडि बहै तउ छूटै नाही ॥ जउ संचै तउ भउ मन माही ॥ इस ही महि जिस की पति राखै तिसु साधू चउरु ढालीऐ ॥६॥ जो सूरा तिस ही होइ मरणा ॥ जो भागै तिसु जोनी फिरणा ॥ जो वरताए सोई भल मानै बुझि हुकमै दुरमति जालीऐ ॥७॥ जितु जितु लावहि तितु तितु लगना ॥ करि करि वेखै अपणे जचना ॥ नानक के पूरन सुखदाते तू देहि त नामु समालीऐ ॥८॥१॥७॥

विधि और महात्म

इस शब्द के शनिवार से २० पाठ हमेशां करने से हर प्रकार की चिंता, गम, फिकर आदि मिटेंगे । संतोष प्राप्त होगा । सुख मिलेगा ।

शब्द नं: ८६

भैरउ महला ५ ॥ (पंन्ना ११३६)

ऊठत सुखीआ बैठत सुखीआ ॥ भउ नही लागै जां ऐसे बुझीआ ॥१॥ राखा एकु हमारा सुआमी ॥ सगल घटा का अंतरजामी ॥१॥ रहाउ ॥ सोइ अचिंता जागि अचिंता ॥ जहा कहां

प्रभु तूं वरतंता ॥२॥ घरि सुखि वसिआ बाहरि सुखु पाइआ ॥ कहु नानक गुरि मंत्रु द्रिड़ाइआ ॥३॥२॥

विधि और महात्म

इस शब्द के २१ पाठ रोज सोमवार को प्रातःकाल करने से डर भय आदि दूर हो जाते हैं । सुख होगा और मन बांछित फल पाएं ।

शब्द नं: ८७

सारग महला ५ ॥ (पंन्ना १२१८)

ठाकुर तुम्ह सरणाई आइआ ॥ उतरि गइओ मेरे मन का संसा जब ते दरसनु पाइआ ॥१॥ रहाउ ॥ अनबोलत मेरी बिरथा जानी अपना नामु जपाइआ ॥ दुख नाठे सुख सहजि समाए अनद अनद गुण गाइआ ॥१॥ बाह पकरि कढि लीने अपुने ग्रिह अंध कूप ते माइआ ॥ कहु नानक गुरि बंधन काटे बिछुरत आनि मिलाइआ ॥२॥५१॥७४॥

विधि और महात्म

इस शब्द के २१ पाठ हर रोज प्रातःकाल को उठकर पवित्र होकर बुधवार से करें तो सभी प्रकार की रक्षा होगी । कोई डर भय नहीं लगेगा । रोगी का रोग दूर होगा। मुकद्दमे के संकट से रक्षा होगी ।

शब्द नं: ८८

सलोक सहसक्रिती महला ५ ॥ (पंन्ना १३५५)

घोर दुख्यं अनिक हत्यं जनम दारिद्रं महा बिख्यादं ॥ मिटंत

सगल सिमरंत हरि नाम नानक जैसे पावक कासट भसमं करोति ॥१८॥

विधि और महात्म

इस शब्द के ५१ पाठ शनिवार से लेकर हर रोज २१ दिन करने से सभी दुःख दलिद्र दूर हो जाते हैं ।

शब्द नं: ८९

सोरठि महला ५ घरु २ चउपदे ॥ १ओ सतिगुर प्रसादि ॥ (पंन्ना ६११-१२)

एकु पिता एकस के हम बारिक तू मेरा गुर हाई ॥ सुणि मीता जीउ हमारा बलि बलि जासी हरि दरसनु देहु दिखाई ॥१॥ सुणि मीता धूरी कउ बलि जाई ॥ इहु मनु तेरा भाई ॥ रहाउ ॥ पाव मलोवा मलि मलि धोवा इहु मनु तै कू देसा ॥ सुणि मीता हउ तेरी सरणाई आइआ प्रभ मिलउ देहु उपदेसा ॥२॥ मानु न कीजै सरणि परीजै करै सु भला मनाईऐ ॥ सुणि मीता जीउ पिंडु सभु तनु अरपीजै इउ दरसनु हरि जीउ पाईऐ ॥३॥ भइओ अनुग्रहु प्रसादि संतन कै हरि नामा है मीठा ॥ जन नानक कउ गुरि किरपा धारी सभु अकुल निरंजनु डीठा ॥४॥१॥१२॥

विधि और महात्म

इस शब्द के ११ पाठ ३१ दिन हर रोज करने से सतिगुरू जी पुत्र की दात बखशिश करेंगे ।

शब्द नं: ९०

गउड़ी महला ५ ।। (पंन्ना २०१)

थिरु घरि बैसहु हरि जन पिआरे ॥ सतिगुरि तुमरे काज सवारे ॥१॥ रहाउ ॥ दुसट दूत परमेसरि मारे ॥ जन की पैज रखी करतारे ॥१॥ बादिसाह साह सभ वसि करि दीने ॥ अंम्रित नाम महा रस पीने ॥२॥ निरभउ होइ भजहु भगवान ॥ साधसंगति मिलि कीनो दानु ॥३॥ सरणि परे प्रभ अंतरजामी ॥ नानक ओट पकरी प्रभ सुआमी ॥४॥१०८॥

विधि और महात्म

इस शब्द के रविवार से १०० बार हर रोज ११ दिन लगातार पाठ करने से हर किसी को अपने वश में कर सकते हैं ।

शब्द नं: ९१

आसा महला ४ छंत घरु ५ (पंन्ना ४५१-५२)

१ओ सतिगुर प्रसादि ।।

मेरे मन परदेसी वे पिआरे आउ घरे ॥ हरि गुरू मिलावहु मेरे पिआरे घरि वसै हरे ॥ रंगि रलीआ माणहु मेरे पिआरे हरि किरपा करे ॥ गुरु नानकु तुठा मेरे पिआरे मेले हरे ॥१॥ मै प्रेमु न चाखिआ मेरे पिआरे भाउ करे ॥ मनि त्रिसना न बुझी मेरे पिआरे नित आस करे ॥ नित जोबनु जावै मेरे पिआरे जमु सास हिरे ॥ भाग मणी सोहागणि मेरे पिआरे नानक हरि उरि धारे ॥२॥ पिर रतिअड़े मैडे लोइण मेरे पिआरे चात्रिक बूंद जिवै ॥ मनु सीतलु होआ मेरे पिआरे

हरि बूंद पीवै ॥ तनि बिरहु जगावै मेरे पिआरे नीद न पवै किवै ॥ हरि सजणु लधा मेरे पिआरे नानक गुरू लिवै ॥३॥ चड़ि चेतु बसंतु मेरे पिआरे भलीअ रुते ॥ पिर बाझड़िअहु मेरे पिआरे आंगणि धूड़ि लुते ॥ मनि आस उडीणी मेरे पिआरे दुइ नैन जुते ॥ गुरु नानकु देखि विगसी मेरे पिआरे जिउ मात सुते ॥४॥ हरि कीआ कथा कहाणीआ मेरे पिआरे सतिगुरू सुणाईआ ॥ गुर विटड़िअहु हउ घोली मेरे पिआरे जिनि हरि मेलाईआ ॥ सभि आसा हरि पूरीआ मेरे पिआरे मनि चिंदिअड़ा फलु पाइआ ॥ हरि तुठड़ा मेरे पिआरे जनु नानकु नामि समाइआ ॥५॥ पिआरे हरि बिनु प्रेमु न खेलसा ॥ किउ पाई गुरु जितु लगि पिआरा देखसा ॥ हरि दातड़े मेलि गुरू मुखि गुरमुखि मेलसा ॥ गुरु नानकु पाइआ मेरे पिआरे धुरि मसतकि लेखु सा ॥६॥१४॥२१॥

विधि और महात्म

इस शब्द के ५ पाठ हर रोज उस दिन तक करने से परदेस गया हुआ पति अथवा प्रेमी राजी खुशी घर वापस आ जाएगा ।

शब्द नं: ९२

सलोक महला ५ ॥ (पंन्ना १४२९)

तेरा कीता जातो नाही मैनो जोगु कीतोई ॥ मै निरगुणिआरे को गुणु नाही आपे तरसु पइओई ॥ तरसु पइआ मिहरामति होई सतिगुरु सजणु मिलिआ ॥ नानक नामु मिलै तां जीवां तनु मनु थीवै हरिआ

विधि और महात्म

इस शब्द के हर रोज़ ५१ पाठ प्रातः काल २१ दिन करने से बिछुड़ा प्रेमी मिल जाता है । बहुत प्यार बढ़ता है ।

शब्द नं: ९३

माझ महला ५ ॥ (पंन्ना १०४-०५)

आउ साजन संत मीत पिआरे॥ मिलि गावह गुण अगम अपारे ॥ गावत सुणत सभे ही मुकते सो धिआईऐ जिनि हम कीए जीउ ॥१॥ जनम जनम के किलबिख जावहि ॥ मनि चिंदे सेई फल पावहि ॥ सिमरि साहिबु सो सचु सुआमी रिजकु सभसु कउ दीए जीउ ॥२॥ नामु जपत सरब सुखु पाईऐ ॥ सभु भउ बिनसै हरि हरि धिआईऐ ॥ जिनि सेविआ सो पारगिरामी कारज सगले थीए जीउ ॥३॥ आइ पइआ तेरी सरणाई ॥ जिउ भावै तिउ लैहि मिलाई ॥ करि किरपा प्रभु भगती लावहु सचु नानक अंम्रितु पीए जीउ ॥४॥२८॥३५॥

विधि और महात्म

इस शब्द के ४० पाठ हर रोज ७ दिन करने से खोया पुत्र या खोई पुत्री मिल जाती है । पाठ शनिवार रात को आरम्भ करना है ।

शब्द नं: ९४

गउड़ी महला ५ ॥ (पंन्ना २०१)

हरि संगि राते भाहि न जलै॥ हरि संगि राते माइआ नही छलै ॥ हरि संगि राते नही डूबै जला ॥ हरि संगि राते सुफल फला ॥१॥

सभ भै मिटहि तुमारै नाइ ॥ भेटत संगि हरि हरि गुन गाइ ॥ रहाउ ॥ हरि संगि राते मिटै सभ चिंता ॥ हरि सिउ सो रचै जिसु साध का मंता ॥ हरि संगि राते जम की नही त्रास ॥ हरि संगि राते पूरन आस ॥२॥ हरि संगि राते दूखु न लागै ॥ हरि संगि राता अनदिनु जागै ॥ हरि संगि राता सहज घरि वसै ॥ हरि संगि राते भ्रमु भउ नसै ॥३॥ हरि संगि राते मति ऊतम होइ ॥ हरि संगि राते निरमल सोइ ॥ कहु नानक तिन कउ बलि जाई ॥ जिन कउ प्रभु मेरा बिसरत नाही ॥४॥१०९॥

विधि और महात्म

इस शब्द का ४१ दिन रोज १०८ बार जाप करो । छाया टूणे दूर होंगे । भूत प्रेत का साया नष्ट होगा । शरीर अरोग और घर में सुख शांती बनी रहे ।

शब्द नं: ९५

सोरठि महला ५ घरु २ ॥ (पंन्ना ६१३)

मात गरभ महि आपन सिमरनु दे तह तुम राखनहारे ॥ पावक सागर अथाह लहरि महि तारहु तारनहारे ॥१॥ माधौ तू ठाकुरु सिरि मोरा ॥ ईहा ऊहा तुहारो धोरा ॥ रहाउ ॥ कीते कउ मेरै संमानै करण हारु त्रिणु जानै ॥ तू दाता मागन कउ सगली दानु देहि प्रभ भानै ॥२॥ खिन महि अवरु खिनै महि अवरा अचरज चलत तुमारे ॥ रूड़ो गूड़ो गहिर गंभीरो ऊचौ अगम अपारे ॥३॥ साधसंगि जउ तुमहि मिलाइओ तउ सुनी तुमारी बाणी ॥ अनदु भइआ पेखत ही नानक प्रताप पुरख निरबाणी ॥४॥७॥१८॥

विधि और महात्म

गर्भ समय स्त्री इस शब्द को दस बार रोज जपे तो बच्चे का जन्म बिना कष्ट से होगा ।

शब्द नं: ९६

बिलावलु महला ५ ॥ (पंन्ना ८१९-२०)

अपणे बालक आपि रखिअनु पारब्रहम गुरदेव ॥ सुख सांति सहज आनद भए पूरन भई सेव ॥१॥ रहाउ ॥ भगत जना की बेनती सुणी प्रभि आपि ॥ रोग मिटाइ जीवालिअनु जा का वड परतापु ॥१॥ दोख हमारे बखसिअनु अपणी कल धारी ॥ मन बांछत फल दितिअनु नानक बलिहारी ॥२॥१६॥८०॥

विधि और महात्म

इस शब्द को २१ दिन रोज १० बार जपने से बच्चा तन्दरुस्त और बिना कष्ट के पैदा होगा ।

शब्द नं: ९७

बिलावलु महला ५ ॥ (पंन्ना ८२६-२७)

पारब्रहम प्रभ भए क्रिपाल ॥ कारज सगल सवारे सतिगुर जपि जपि साधू भए निहाल ॥१॥ रहाउ ॥ अंगीकारु कीआ प्रभि अपनै दोखी सगले भए रवाल ॥ कंठि लाइ राखे जन अपने उधरि लीए लाइ अपनै पाल ॥१॥ सही सलामति मिलि घरि आए निंदक के मुख होए काल ॥ कहु नानक मेरा सतिगुरु पूरा गुर प्रसादि प्रभ भए

निहाल ॥२॥२७॥११३॥

विधि और महातम

इस शब्द को ४१ दिन हर रोज ४१ बार जपने से निंदक दोखी निंदा करने से हट जाते हैं । हर तरह का सुख प्राप्त होता है । प्रमात्मा की प्रसन्नता प्राप्त होती है । सभी कामों में सफलता मिलती है ।

शब्द नं: ९८

गउड़ी सुखमनी म: ५ ॥ (पंन्ना २६६)

निरधन कउ धनु तेरो नाउ ॥ निथावे कउ नाउ तेरा थाउ ॥ निमाने कउ प्रभ तेरो मानु ॥ सगल घटा कउ देवहु दानु ॥ करन करावनहार सुआमी ॥ सगल घटा के अंतरजामी ॥ अपनी गति मिति जानहु आपे ॥ आपन संगि आपि प्रभ राते ॥ तुम्हरी उसतति तुम ते होइ ॥ नानक अवरु न जानसि कोइ ॥७॥

विधि और महात्म

इस शब्द को चालीस दिन हर रोज ४० बार जपने से बेअन्त धन की प्राप्ति होती है । खाने पीने के पदार्थों की भी कभी तोट नहीं आएगी ।

शब्द नं: ९९

रागु सूही छंत महला ४ ॥ (पंन्ना ७७५)

हरि प्रभि काजु रचाइआ ॥ गुरमुखि वीआहणि आइआ ॥ वीआहणि आइआ गुरमुखि हरि पाइआ सा धन कंत पिआरी ॥ संत जना मिलि मंगल गाए हरि जीउ आपि सवारी ॥ सुरि नर गण गंधरब मिलि आए अपूरब जंण बणाई ॥ नानक प्रभु पाइआ मै

साचा ना कदे मरै न जाई ॥४॥१॥३॥

विधि और महात्म

इस शब्द को ४० दिनों में २०,००० बार जपने से लड़के या लड़की की किसी अच्छे से घर में जल्द ही मंगनी होगी । घर में आनन्द मंगलाचार बना रहे ।

शब्द नं: १००

आसा महला ५ ॥ (पंन्ना ३८५)

पावतु रलीआ जोबनि बलीआ ॥ नाम बिना माटी संगि रलीआ ॥१॥ कान कुंडलीआ बसत्र ओढलीआ ॥ सेज सुखलीआ मनि गरबलीआ ॥१॥ रहाउ ॥ तलै कुंचरीआ सिरि कनिक छतरीआ ॥ हरि भगति बिना ले धरनि गडलीआ ॥२॥ रूप सुंदरीआ अनिक इसतरीआ ॥ हरि रस बिनु सभि सुआद फिकरीआ ॥३॥ माइआ छलीआ बिकार बिखलीआ ॥ सरणि नानक प्रभ पुरख दइअलीआ ॥४॥४॥५५॥

विधि और महात्म

इस शब्द का पाठ ११०० बार मंगलवार से लेकर ४१ दिनों में करें तो मन निर्मल हो जाता है । ईश्वर की भक्ति में मन लगेगा ।

शब्द नं: १०१

आसा महला ५ ॥ (पंन्ना ३८५)

राज लीला तेरै नामि बनाई ॥ जोगु बनिआ तेरा कीरतनु गाई ॥१॥

सरब सुखा बने तेरै ओल्है ॥ भ्रम के पर्दे सतिगुर खोल्हे ॥१॥ रहाउ ॥ हुकमु बूझि रंग रस माणे ॥ सतिगुर सेवा महा निरबाणे ॥२॥ जिनि तूं जाता सो गिरसत उदासी परवाणु ॥ नामि रता सोई निरबाणु ॥३॥ जा कउ मिलिओ नामु निधाना ॥ भनति नानक ता का पूर खजाना ॥४॥६॥५७॥

विधि और महात्म

इस शब्द का पाठ हर रोज ५ बार ४१ दिन करने से मन का भ्रम आदि दूर होगा । नाम रूपी खजाना प्राप्त होगा ।

शब्द नं: १०२

आसा महला ५ ॥ (पंन्ना ३९२)

सगल सूख जपि एकै नाम ॥ सगल धरम हरि के गुण गाम ॥ महा पवित्र साध का संगु ॥ जिसु भेटत लागै प्रभ रंगु ॥१॥ गुर प्रसादि उइ आनंद पावै ॥ जिसु सिमरत मनि होइ प्रगासा ता की गति मिति कहनु न जावै ॥१॥ रहाउ ॥ वरत नेम मजन तिसु पूजा ॥ बेद पुरान तिनि सिंम्रिति सुनीजा ॥ महा पुनीत जा का निरमल थानु ॥ साधसंगति जा कै हरि हरि नामु ॥२॥ प्रगटिओ सो जनु सगले भवन ॥ पतित पुनीत ता की पग रेन ॥ जा कउ भेटिओ हरि हरि राइ ॥ ता की गति मिति कथनु न जाइ ॥३॥ आठ पहर कर जोड़ि धिआवउ ॥ उन साधा का दरसनु पावउ ॥ मोहि गरीब कउ लेहु रलाइ ॥ नानक आइ पए सरणाइ ॥४॥३८॥८९

विधि और महात्म

अगर किसी पाप का प्राश्चित करना हो तो इस शब्द का पाठ ५,००० बार सोमवार से करें तो मन के सब पाप दूर होंगे ।

शब्द नं: १०३

आसा महला ५ पंचपदा ।। (पंन्ना ३९३)

जिह पैडै लूटी पनिहारी ॥ सो मारगु संतन दूरारी ॥१॥ सतिगुर पूरै साचु कहिआ ॥ नाम तेरे की मुकते बीथी जम का मारगु दूरि रहिआ ॥१॥ रहाउ ॥ जह लालच जागाती घाट ॥ दूरि रही उह जन ते बाट ॥२॥ जह आवटे बहुत घन साथ ॥ पारब्रहम के संगी साध ॥३॥ चित्र गुपतु सभ लिखते लेखा ॥ भगत जना कउ द्रिसटि न पेखा ॥४॥ कहु नानक जिसु सतिगुरु पूरा ॥ वाजे ता कै अनहद तूरा ॥५॥४०॥९१॥

विधि और महात्म

इस शब्द का पाठ ४१ बार घर से जाते समय करें तो सफर में अकाल पुरख हर प्रकार की रक्षा करेंगे । ठीक ठाक पहुंच जाएंगे । हर रोज १० बार इस शब्द का पाठ करना जरूरी है ।

शब्द नं: १०४

जैतसरी महला ४ घरु १ चउपदे (पंन्ना ६९६)

१ओ सतिगुर प्रसादि ।।

मेरै हीअरै रतनु नामु हरि बसिआ गुरि हाथु धरिओ मेरै माथा ॥ जनम जनम के किलबिख दुख उतरे गुरि नामु दीओ रिनु लाथा ॥१॥

मेरे मन भजु राम नामु सभि अरथा ॥ गुरि पूरै हरि नामु द्रिड़ाइआ बिनु नावै जीवनु बिरथा ॥ रहाउ ॥ बिनु गुर मूड़ भए है मनमुख ते मोह माइआ नित फाथा ॥ तिन साधू चरण न सेवै कबहू तिन सभु जनमु अकाथा ॥२॥ जिन साधू चरण साध पग सेवे तिन सफलिओ जनमु सनाथा ॥ मो कउ कीजै दासु दास दासन को हरि दइआ धारि जगंनाथा ॥३॥ हम अंधुले गिआनहीन अगिआनी किउ चालह मारगि पंथा ॥ हम अंधुले कउ गुर अंचलु दीजै जन नानक चलह मिलंथा ॥४॥१॥

विधि और महात्म

इस शब्द का पाठ १०,००० बार करें। बुधवार से ५०० पाठ हर रोज सुबह करें तो कारज सुधरेंगे। नौकरी में तरक्की न होती हो तो हो जाएगी।

शब्द नं: १०५ (पंन्ना १८५)

हम धनवंत भागठ सच नाइ॥ हरि गुण गावह सहजि सुभाइ ॥१॥ रहाउ ॥ पीऊ दादे का खोलि डिठा खजाना ॥ ता मेरै मनि भइआ निधाना ॥१॥

विधि और महात्म

जो इस शब्द का पाठ ४०,००० बार सोमवार से ४० दिन में करेगा उस को धन की प्राप्ति होगी।

शब्द नं: १०६ (पंन्ना १९१)

सूके हरे कीए खिन माहे ॥ अंम्रित द्रिसटि संचि जीवाए ॥१॥ काटे कसट पूरे गुरदेव ॥ सेवक कउ दीनी अपुनी सेव ॥१॥ रहाउ ॥

विधि और महात्म

इस शब्द का पाठ २१ बार रोज मंगलवार के दिन से करें तो हर प्रकार का कष्ट आदि दूर होगा । सूखा बच्चा सेहतमंद होगा ।

शब्द नं: १०७ (पंन्ना १९१)

ताप गए पाई प्रभि सांति ॥ सीतल भए कीनी प्रभ दाति ॥१॥ प्रभ किरपा ते भए सुहेले ॥ जनम जनम के बिछुरे मेले ॥१॥ रहाउ ॥

विधि और महात्म

इस शब्द का पाठ ५० बार करने से हर प्रकार का बुखार और रोग ठीक हो कर सेहत बनती है ।

शब्द नं: १०८ (पंन्ना १७७)

जिन कीता माटी ते रतनु ॥ गरभ महि राखिआ जिनि करि जतनु ॥ जिनि दीनी सोभा वडिआई ॥ तिसु प्रभ कउ आठ पहर धिआई ॥१॥

विधि और महात्म

इस शब्द का पाठ २१ बार बच्चा पैदा होने के समय सूतक के दिनों में रोजाना करें । हर प्रकार की रक्षा होगी ।

शब्द नं: १०९ (पंन्ना १८०)

तउ किरपा ते मारगु पाईऐ ॥ प्रभ किरपा ते नामु धिआईऐ ॥ प्रभ किरपा ते बंधन छुटै ॥ तउ किरपा ते हउमै तुटै ॥१॥

विधि और महात्म

इस शब्द का पाठ २१ दिन करने से सतिसंग की प्राप्ति होगी। नाम में बिरती लगे।

शब्द नं: ११० (पंन्ना ७०)

जा कउ मुसकलु अति बणै ढोई कोइ न देइ॥ लागू होए दुसमना साक भि भजि खले॥ सभो भजै आसरा चुकै सभु असराउ॥ चिति आवै ओसु पारब्रहमु लगै न ततो वाउ॥१॥

विधि और महात्म

जिस समय ज्यादा मुश्कल बने तो इस शब्द को १०० बार हर रोज करें। हर प्रकार की विप्ता, मुश्कल आदि दूर होगी।

शब्द नं: १११ (पंन्ना ७५)

पहिलै पहरै रैणि कै वणजारिआ मित्रा बालक बुधि अचेतु॥ खीरु पीऐ खेलाईऐ वणजारिआ मित्रा मात पिता सुत हेतु॥ मात पिता सुत नेहु घनेरा माइआ मोहु सबाई॥ संजोगी आइआ किरतु कमाइआ करणी कार कराई॥ राम नाम बिनु मुकति न होइ बूडी दूजै हेति॥ कहु नानक प्राणी पहिलै पहरै छूटहिगा हरि चेति॥१॥

विधि और महात्म

इस शब्द का पाठ भी खुशी के समय करें निरविघ्न होगा और वैराग धारण के लिए रोज १०० पाठ करो। मन को शांति और ज्ञान प्राप्त होगा।

शब्द नं: ११२ (पंन्ना १००)

अंम्रित नामु सदा निरमलीआ॥ सुखदाई दूख बिडारन हरीआ॥

अवरि साद चखि सगले देखे मन हरि रसु सभ ते मीठा जीउ ॥१॥

विधि और महात्म

इस शब्द का पाठ ११ बार सोमवार से लेकर २१ दिन तक करने से आप का दुःख दूर हो जाएगा ।

शब्द नं: ११३ (पंन्ना २२४)

ब्रहमै गरबु कीआ नही जानिआ ॥ बेद की बिपति पड़ी पछुतानिआ ॥ जह प्रभ सिमरे तही मनु मानिआ ॥१॥ ऐसा गरबु बुरा संसारै ॥ जिसु गुरु मिलै तिसु गरबु निवारै ॥१॥ रहाउ ॥

विधि और महात्म

इस शब्द का पाठ हर रोज ३१ दिन करें तो हर प्रकार का मन का हंकार दूर होगा । मन नीवां होने से सतिसंग प्राप्त होगा ।

शब्द नं: ११४ (पंन्ना २६२)

सिमरउ सिमरि सिमरि सुखु पावउ ॥ कलि कलेस तन माहि मिटावउ ॥ सिमरउ जासु बिसुंभर एकै ॥ नामु जपत अगनत अनेकै ॥ बेद पुरान सिंम्रिति सुधाख्यर ॥ कीने राम नाम इक आख्यर ॥ किनका एक जिसु जीअ बसावै ॥ ता की महिमा गनी न आवै ॥ कांखी एकै दरस तुहारो ॥ नानक उन संगि मोहि उधारो ॥१॥

विधि और महात्म

जो इस शब्द के ११ पाठ रोज करेगा । उस का हर प्रकार का कलेश नवृत हो जाएगा ।

शब्द नं: ११५ (पंन्ना २६२)

प्रभ कै सिमरनि रिधि सिधि नउ निधि॥ प्रभ कै सिमरनि गिआनु धिआनु ततु बुधि॥ प्रभ कै सिमरनि जप तप पूजा॥ प्रभ कै सिमरनि बिनसै दूजा॥ प्रभ कै सिमरनि तीरथ इसनानी॥ प्रभ कै सिमरनि दरगह मानी॥ प्रभ कै सिमरनि होइ सुभला॥ प्रभ कै सिमरनि सुफल फला॥ से सिमरहि जिन आपि सिमराए॥ नानक ता कै लागउ पाए॥३॥

विधि और महात्म

इस शब्द के २१ हजार कुल पाठ करो। ४१ दिनों में धन प्राप्त होगा।

शब्द नं: ११६ (पंन्ना २६३)

प्रभ कउ सिमरहि से धनवंते॥ प्रभ कउ सिमरहि से पतिवंते॥ प्रभ कउ सिमरहि से जन परवान॥ प्रभ कउ सिमरहि से पुरख प्रधान॥ प्रभ कउ सिमरहि सि बेमुहताजे॥ प्रभ कउ सिमरहि सि सरब के राजे॥ प्रभ कउ सिमरहि से सुखवासी॥ प्रभ कउ सिमरहि सदा अबिनासी॥ सिमरन ते लागे जिन आपि दइआला॥ नानक जन की मंगै रवाला॥५॥

विधि और महात्म

इस शब्द का पाठ एक लाख बार करें। २०० दिनों के अन्दर बहुत दौलत जमां होगी। रईस हो जाएंगे हर काम पूरा होगा।

शब्द नं: ११७ (पंन्ना २६३)

सलोकु॥ दीन दरद दुख भंजना घटि घटि नाथ अनाथ॥ सरणि

तुम्हारी आइओ नानक के प्रभ साथ ॥१

विधि और महात्म

इस शब्द का पाठ १०० बार हर रोज करो ॥ रविवार या मंगलवार से । दुःख तकलीफ सभी प्रकार के कष्ट दूर होंगे ।

शब्द नं: ११८ (पंन्ना २६४)

जह मात पिता सुत मीत न भाई॥ मन ऊहा नामु तेरै संगि सहाई ॥ जह महा भइआन दूत जम दलै ॥ तह केवल नामु संगि तेरै चलै ॥ जह मुसकल होवै अति भारी ॥ हरि को नामु खिन माहि उधारी ॥ अनिक पुनहचरन करत नही तरै॥ हरि को नामु कोटि पाप परहरै ॥ गुरमुखि नामु जपहु मन मेरे ॥ नानक पावहु सूख घनेरे ॥१॥

विधि और महात्म

जब किसी पर कोई मुकद्दमा बन जाए तो इस शब्द का पाठ हर रोज ४१ बार करें । नाम जपे तो मुकद्दमा फतह हो जाएगा । कैद से छूटे ।

शब्द नं: ११९ (पंन्ना १९१)

कलि कलेस गुर सबदि निवारे॥ आवण जाण रहे सुख सारे ॥१॥ भै बिनसे निरभउ हरि धिआइआ ॥ साधसंगि हरि के गुण गाइआ ॥१॥ रहाउ ॥ चरन कवल रिद अंतरि धारे॥ अगनि सागर गुरि पारि उतारे॥२॥ बूडत जात पूरै गुरि काढे॥ जनम जनम के टूटे गाढे ॥३॥ कहु नानक तिसु गुर बलिहारी ॥ जितु भेटत गति भई हमारी ॥४॥५६॥१२५॥

विधि और महात्म

इस शब्द को २१ बार जपने से हर प्रकार की तकलीफ, कष्ट दूर हो जाता है और दुश्मन का डर नहीं रहता ।

शब्द नं: १२० (पंन्ना १०२)

सभ किछु घर महि बाहरि नाही ॥ बाहरि टोलै सो भरमि भुलाही ॥ गुर परसादी जिनी अंतरि पाइआ सो अंतरि बाहरि सुहेला जीउ ॥१॥

विधि और महात्म

इस शब्द का पाठ ५ हजार बार हर रोज शुक्रवार से लेकर ४० दिन करें । सब कुछ घर से ही हासल होगा ।

शब्द नं: १२१ (पंन्ना १०२)

तिसु कुरबाणी जिनि तूं सुणिआ ॥ तिसु बलिहारी जिनि रसना भणिआ ॥ वारि वारि जाई तिसु विटहु जो मनि तनि तुधु आराधे जीउ ॥१॥

विधि और महात्म

इस शब्द का ४१ बार पाठ मंगलवार से रोजाना ४१ दिन करें तो वैरी दुश्मन का भय दूर होगा । मन शांत हो जाएगा ।

शब्द नं: १२२ (पंन्ना १०३)

तूं मेरा पिता तूंहै मेरा माता ॥ तूं मेरा बंधपु तूं मेरा भ्राता ॥ तूं मेरा राखा सभनी थाई ता भउ केहा काड़ा जीउ ॥१॥

विधि और महात्म

इस शब्द का पाठ २१ बार हर रोज करेंगे तो आपको किसी प्रकार का डर भय आदि दूर होगा। हर प्रकार से रक्षा होती है। राज दरबार में रुची हो तो हाकम मेहरबान हो।

शब्द नं: १२३ (पंन्ना १०४)

हुकमी वरसण लागे मेहा ॥ साजन संत मिलि नामु जपेहा ॥
सीतल सांति सहज सुखु पाइआ ठाढि पाइ प्रभि आपे जीउ ॥१॥

विधि और महात्म

इस शब्द का २००० पाठ शनिवार से ले कर ७ दिन पहिर रात रहते करें तो वर्षा होगी।

शब्द नं: १२४ (पंन्ना १०५)

मीहु पइआ परमेसरि पाइआ ॥ जीअ जंत सभि सुखी वसाइआ ॥
गइआ कलेसु भइआ सुखु साचा हरि हरि नामु समाली जीउ ॥१॥

विधि और महात्म

इस शब्द का पाठ सुबह अमृत समय से शुरू करके ३१ दिन करें तो वर्षा होगी।

शब्द नं: १२५ (पंन्ना १९०)

राखि लीआ गुरि पूरै आपि ॥ **मनमुख कठ** लागो संतापु ॥१॥
गुरू गुरू जपि मीत हमारे ॥ मुख ऊजल होवहि दरबारे ॥१॥ रहाउ ॥
गुर के चरण हिरदै वसाइ ॥ दुख दुसमन तेरी हतै बलाइ ॥२॥ गुर

का सबदु तेरै संगि सहाई ॥ दइआल भए सगले जीअ भाई ॥३॥ गुरि पूरै जब किरपा करी ॥ भनति नानक मेरी पूरी परी ॥४॥५४॥१२३॥

विधि और महात्म

इस शब्द का ३१ दिन तक हर रोज १०८ बार पाठ करने से पापियों, दुश्मनों का जोर दूर होगा और सतिगुरू जी संकटों से रक्षा करेंगे ।

शब्द नं: १२६ (पंन्ना ६२६)

गुर का सबदु रखवारे ॥ चउकी चउगिरद हमारे ॥ राम नामि मनु लागा ॥ जमु लजाइ करि भागा ॥१॥ प्रभ जी तू मेरो सुखदाता ॥ बंधन काटि करे मनु निरमलु पूरन पुरखु बिधाता ॥ रहाउ ॥ नानक प्रभु अबिनासी ॥ ता की सेव न बिरथी जासी ॥ अनद करहि तेरे दासा ॥ जपि पूरन होई आसा ॥२॥४॥६८॥

विधि और महात्म

इस शब्द को ४० बार रोज जपने से शरीर की रक्षा होती है और हर बंधन टूट जाता है ।

शब्द नं: १२७

जैतसरी महला ५ घरु ३ दुपदे (पंन्ना ७००)

१ओ सतिगुर प्रसादि ॥

देहु संदेसरो कहीअउ प्रिअ कहीअउ ॥ बिसमु भई मै बहु बिधि सुनते कहहु सुहागनि सहीअउ ॥१॥ रहाउ ॥ को कहतो सभ बाहरि बाहरि को कहतो सभ महीअउ ॥ बरनु न दीसै चिहनु न

लखीऐ सुहागनि साति बुझहीअउ ॥१॥ सरब निवासी घटि घटि वासी लेपु नही अलपहीअउ॥ नानकु कहत सुनहु रे लोगा संत रसन को बसहीअउ ॥२॥

विधि और महात्म

इस शब्द का पाठ ४१ दिन हर रोज १०८ बार पढ़ने से बिछुड़े हुए मित्र और संबंधियों से मिलाप हो जाता है ।

शब्द नं: १२८

सोरठि म: ५ ॥ (पंन्ना ६२५)

गुरु पूरा नमसकारे ॥ प्रभि सभे काज सवारे ॥ हरि अपणी किरपा धारी ॥ प्रभ पूरन पैज सवारी ॥१॥ अपने दास को भइओ सहाई ॥ सगल मनोरथ कीने करतै ऊणी बात न काई ॥ रहाउ ॥ करतै पुरखि तालु दिवाइआ ॥ पिछै लगि चली माइआ ॥ तोटि न कतहू आवै ॥ मेरे पूरे सतगुर भावै ॥२॥ सिमरि सिमरि दइआला ॥ सभि जीअ भए किरपाला ॥ जै जै कारु गुसाई ॥ जिनि पूरी बणत बणाई ॥३॥ तू भारो सुआमी मोरा ॥ इहु पुंनु पदारथु तेरा ॥ जन नानक एकु धिआइआ ॥ सरब फला पुंनु पाइआ ॥४॥१४॥६४॥

विधि और महात्म

इस शब्द को १०० बार रोज जपने से धन प्राप्त और सभ बिगड़े काम रास आएंगे । घर में माया की लहर बहर होगी ।

शब्द नं: १२९

सलोक मः २ ॥ (पंन्ना १५५)

नानक चिंता मति करहु चिंता तिस ही हेइ ॥ जल महि जंत उपाइअनु तिना भि रोजी देइ ॥ ओथै हटु न चलई ना को किरस करेइ ॥ सउदा मूलि न होवई ना को लए न देइ ॥ जीआ का आहारु जीअ खाणा एहु करेइ ॥ विचि उपाए साइरा तिना भि सार करेइ ॥ नानक चिंता मत करहु चिंता तिस ही होइ ॥१॥

विधि और महात्म

यह शब्द रात के तीसरे पहर लगातार २१ दिन १०० पाठ रोज करने से सब प्रकार की चिंता दूर हो और मन को शांति मिले ।

शब्द नं: १३०

सोरठि महला ५ ॥ (पंन्ना ६१९)

सिमरि सिमरि गुरु सतिगुरु अपना सगला दूखु मिटाइआ ॥ ताप रोग गए गुर बचनी मन इछे फल पाइआ ॥१॥ मेरा गुरु पूरा सुख दाता ॥ करण कारण समरथ सुआमी पूरन पुरखु बिधाता ॥ रहाउ ॥ अनंद बिनोद मंगल गुण गावहु गुर नानक भए दइआला ॥ जै जै कार भए जग भीतरि होआ पारब्रहमु रखवाला ॥२॥१५॥४३॥

विधि और महात्म

इस शब्द को रविवार से ४० बार हर रोज ४० दिन जपें । सभी दुःख दूर हो जाएंगे । मन इच्छित फल प्राप्त होगा । तीनों तापों की नवृति होगी ।

शब्द नं: १३१

बिलावलु महला ५ ॥ (पंन्ना ८२६)

गोबिदु सिमरि होआ कलिआणु ॥ मिटी उपाधि भइआ सुखु साचा अंतरजामी सिमरिआ जाणु ॥१॥ रहाउ ॥ जिस के जीअ तिनि कीए सुखाले भगत जना कउ साचा ताणु ॥ दास अपुने की आपे राखी भै भंजन ऊपरि करते माणु ॥१॥ भई मित्राई मिटी बुराई द्रुसट दूत हरि काढे छाणि ॥ सूख सहज आनंद घनेरे नानक जीवै हरि गुणह वखाणि ॥२॥२६॥११२॥

विधि और महात्म

इस शब्द को १०० दिन ८ बार हर रोज़ जपने से सरब कल्याण होगा। मन की अशांति मिटे और बंधनों का नाश हो।

शब्द नं: १३२

आसा महला १ ॥ (पंन्ना ३६०)

खुरासान खसमाना कीआ हिंदुसतानु डराइआ ॥ आपै दोसु न देई करता जमु करि मुगलु चड़ाइआ ॥ एती मार पई करलाणे तैं की दरदु न आइआ ॥१॥ करता तूं सभना का सोई ॥ जे सकता सकते कउ मारे ता मनि रोसु न होई ॥१॥ रहाउ ॥ सकता सीहु मारे पै वगै खसमै सा पुरसाई ॥ रतन विगाड़ि विगोए कुती मुइआ सार न काई ॥ आपे जोड़ि विछोड़े आपे वेखु तेरी वडिआई ॥२॥ जे को नाउ धराए वडा साद करे मनि भाणे ॥ खसमै नदरी कीड़ा आवै जेते चुगै दाणे ॥ मरि मरि जीवै ता किछु पाए नानक नामु वखाणे ॥३॥५॥३९॥

विधि और महात्म

इस शब्द का पाठ २१ बार हर रोज करो। सोमवार से लेकर ४० दिन करने से विप्ता से रक्षा होगी।

शब्द नं: १३३

आसा महला ५ ।। (पंन्ना ३७८)

हरि जन लीने प्रभू छडाइ ॥ प्रीतम सिउ मेरो मनु मानिआ तापु मुआ बिखु खाइ ॥१॥ रहाउ ॥ पाला ताऊ कछू न बिआपै राम नाम गुन गाइ ॥ डाकी को चिति कछू न लागै चरन कमल सरनाइ ॥१॥ संत प्रसादि भए किरपाला होए आपि सहाइ ॥ गुन निधान निति गावै नानकु सहसा दुखु मिटाइ ॥२॥

विधि और महात्म

इस शब्द का पाठ ५ बार रोज करने से हर प्रकार का ताप अकाल पुरख की दया से मिट जाता है और रोग दूर हो जाता है। कल्याण हो जाता है।

चौपई साहिब

१ओ स्री वाहिगुरू जी की फतह ।।

पा. १० ।। कबियो बाच बेनती ।। चौपई ।।

हमरी करो हाथ दै रच्छा॥ पूरन होइ चित की इच्छा॥ तव चरनन मन रहै हमारा॥ अपना जान करो प्रतिपारा ॥१॥ हमरे दुसट सभै तुम घावहु॥ आपु हाथ दै मोहि बचावहु॥ सुखी बसै मोरो परिवारा॥ सेवक सिक्ख सभै करतारा॥२॥ मो रच्छा निज कर दै करियै॥ सभ बैरन को आज संघरियै॥ पूरन होइ हमारी आसा॥ तोर भजन की रहै पिआसा॥३॥ तुमहि छाडि कोई अवर न धियाऊं॥ जो बर चहों सु तुम ते पाऊं॥ सेवक सिक्ख हमारे तारीअहि॥ चुनि चुनि सत्र हमारे मारीअहि॥४॥ आप हाथ दै मुझै उबरियै॥ मरन काल का त्रास निवरियै॥ हूजो सदा हमारे पच्छा॥ स्री असिधुज जू करियहु रच्छा॥५॥ राखि लेहु मुहि राखनहारे॥ साहिब संत सहाइ पियारे॥ दीन बंधु दुसटन के हंता॥ तुमहो पुरी चतुरदस कंता॥६॥ काल पाइ ब्रहमा बपु धरा॥ काल पाइ सिवजू अवतरा॥ काल पाइ कर बिसन प्रकासा॥ सकल काल का कीआ तमासा॥७॥ जवन काल जोगी सिव कीओ॥ बेद राज ब्रहमा जू थीओ॥ जवन काल सभ लोक सवारा॥ नमसकार है ताहि हमारा॥८॥ जवन काल सभ जगत बनायो॥ देव दैत जच्छन उपजायो॥ आदि अंति एकै अवतारा॥ सोई गुरू समझियहु हमारा॥९॥ नमसकार तिसही को हमारी॥ सकल प्रजा जिन आप सवारी॥ सिवकन को सिवगुन सुख दीओ॥ सत्रुन को पल मो बध कीओ॥१०॥ घट घट के अंतर की जानत॥

भले बुरे की पीर पछानत॥ चीटी ते कुंचर असथूला॥ सभ पर क्रिपा द्रिसटि कर फूला ॥११॥ संतन दुख पाए ते दुखी ॥ सुख पाए साधुन के सुखी॥ एक एक की पीर पछानैं॥ घट घट के पट पट की जानैं ॥१२॥ जब उदकरख करा करतारा॥ प्रजा धरत तब देह अपारा॥ जब आकरख करत हो कबहूं॥ तुम मै मिलत देह धर सभहूं ॥१३॥ जेते बदन स्रिसटि सभ धारै॥ आपु आपनी बूझ उचारै॥ तुम सभ ही ते रहत निरालम॥ जानत बेद भेद अर आलम ॥१४॥ निरंकार न्रिबिकार निरलंभ॥ आदि अनील अनादि असंभ॥ ता का मूढ़ उचारत भेदा॥ जा को भेव न पावत बेदा॥१५॥ ता को करि पाहन अनुमानत॥ महा मूढ़ कछु भेद न जानत॥ महादेव को कहत सदा सिव॥ निरंकार का चीनत नहि भिव॥१६॥ आपु आपनी बुधि है जेती॥ बरनत भिंन भिंन तुहि तेती॥ तुमरा लखा न जाइ पसारा॥ किह बिधि सजा प्रथम संसारा॥१७॥ एकै रूप अनूप सरूपा॥ रंक भयो राव कही भूपा॥ अंडज जेरज सेतज कीनी॥ उतभुज खानि बहुरि रचि दीनी॥१८॥ कहूं फूल राजा ह्वै बैठा॥ कहूं सिमटि भ्यिो संकर इकैठा॥ सगरी स्रिसटि दिखाइ अचंभव॥ आदि जुगादि सरूप सुयंभव॥१९॥ अब रच्छा मेरी तुम करो॥ सिक्ख उबारि असिक्ख संघरो॥ दुशट जिते उठवत उतपाता॥ सकल मलेछ करो रण घाता॥२०॥ जे असिधुज तव सरनी परे॥ तिन के दुशट दुखित ह्वै मरे॥ पुरख जवन पग परे तिहारे॥ तिन के तुम संकट सभ टारे॥२१॥ जो कलि को इक बार धिऐहै॥ ता के काल निकटि नहि ऐहै॥ रच्छा होइ ताहि सभ काला॥ दुसट अरिसट टरें ततकाला॥२२॥ क्रिपा द्रिसटि तन जाहि निहरिहो॥ ता के ताप तनक मो

हरिहो ॥ रिद्धि सिद्धि घर मो सभ होई ॥ दुशट छाह छ्वै सकै न कोई ॥२३॥ एक बार जिन तुमै संभारा ॥ काल फास ते ताहि उबारा ॥ जिन नर नाम तिहारो कहा ॥ दारिद दुसट दोख ते रहा ॥२४॥ खड़्गकेत मै सरणि तिहारी ॥ आप हाथ दै लेहु उबारी ॥ सरब ठौर मो होहु सहाई ॥ दुसट दोख ते लेहु बचाई ॥२५॥ क्रिपा करी हम पर जग माता ॥ ग्रंथ करा पूरन सुभ राता ॥ किलबिख सकल देह को हरता ॥ दुसट दोखियन को छै करता ॥२६॥ स्री असिधुज जब भए दइआला ॥ पूरन करा ग्रंथ ततकाला ॥ मन बांछत फल पावै सोई ॥ दूख न तिसै बिआपत कोई ॥२७॥

अड़िल्ल ॥ सुनै गुंग जो याहि सु रसना पावई ॥ सुनै मूड़ चित लाइ चतुरता आवई ॥ दूख दरद भौ निकट न तिन नर के रहै ॥ हो जो याकी एक बार चौपई को कहै ॥२८॥

चौपई ॥ संबत सत्रह सहस भणिज्जै ॥ अरध सहस फुनि तीनि कहिज्जै ॥ भाद्रव सुदी असटमी रविवारा ॥ तीर सत्तुद्रव ग्रंथ सुधारा ॥२९॥

स्वैया ॥ पांइ गहे जब ते तुमरे तब ते कोऊ आंख तरे नहीं आन्यो ॥ राम रहीम पुरान कुरान अनेक कहैं मत एक न मान्यो ॥ सिंम्रित सासत्र बेद सभै बहु भेद कहैं हम एक न जान्यो ॥ स्री असिपान क्रिपा तुमरी करि मै न कह्यो सभ तोहि बखान्यो ॥१॥

दोहरा ॥ सगल दुआर कउ छाडि कै गहिओ तुहारो दुआर ॥ बांहि गहे की लाज अस गोबिंद दास तुहार ॥२॥

विधि और महात्म–हर रोज़ २१ पाठ करने से दुःखों कलेशों से छुटकारा मिलता है और हर प्रकार की रक्षा होती है ।

ਭਾ: ਜਵਹਰ ਸਿੰਘ ਕ੍ਰਿਪਾਲ ਸਿੰਘ ਐਂਡ ਕੰ:
ਗਲੀ ਨੰ: ੪, ਬਾਗ ਰਾਮਾ ਨੰਦ, ਅੰਮ੍ਰਿਤਸਰ